हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार, 14 सितंबर, 2025

11 रोडवेज कर्मियों ने मांगों को लेकर 2 घंटे किया विरोध प्रदर्शन

12 जलभराव बना किसानों के लिए कहर, बह गई उम्मीदें...

खबर संक्षेप

आईटीआई, भोडिया खेड़ा में रोजगार मेला 17 को

फतेहाबाद। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भोडिया खेड़ा में 17 सितंबर को एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा, जिसमें हीरो मोटोक्रोप लिमिटेड निमराना (राजस्थान) कंपनी के प्रतिनिधि 10वीं, 12वीं व आईटीआई पासशुद्धा के सभी व्यवसायों के पास छात्रों को साक्षात्कार के माध्यम से अप्रेंटिसशिप/प्लेसमेंट के लिए चयन करेंगे।

राज्य स्तरीय कराटे स्पर्धा के ट्रायल 16 सितंबर को

फतेहाबाद। खेल विभाग हरियाणा द्वारा राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ के द्वितीय चरण में कराटे खेल को शामिल किया गया है। राज्य स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में जिला फतेहाबाद के खिलाडिय़ों के जिला ट्रायल मंगलवार 16 सितंबर को सुबह 10 बजे जिला स्तरीय भोडिया खेड़ा स्टेडियम में करवाया जाएगा।

ऑनलाइन बुकिंग के नाम पर फ्रॉड, आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। खाटू श्याम में ऑनलाइन कमरे बुकिंग से संबंधित एक साइबर ठगी मामले में थाना सदर टोहाना पुलिस ने तीसरे आरोपी को गिरफ्तार किया है। इस बारे पुलिस ने 10 जून को राधे श्याम पुत्र सुरेश कुमार, निवासी गांव कन्हेड़ी की शिकायत पर केस दर्ज किया था।

मंदिर का दानपात्र चोरी करने पर चार गिरफ्तार

फतेहाबाद। मंदिर का दानपात्र चोरी करने के मामने में भुना पुलिस ने चार अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इससे पहले इसी मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। थाना भुना प्रभारी उपनिरीक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि थाना क्षेत्र के गांव सनियाना निवासी रमेश कुमार ने शिकायत दर्ज कराई थी कि रविदास मंदिर का दानपात्र चोरी हो गया है।

नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में दो काबू

फतेहाबाद। नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर ले जाने और उसके साथ दुष्कर्म करने के मामले में फतेहाबाद पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस बारे पुलिस ने 16 अगस्त को केस दर्ज किया था। शिकायतकर्ता ने पुलिस को सूचना दी थी कि उसकी नाबालिग बेटी को कोई अज्ञात व्यक्ति बहला-फुसलाकर ले गया है।

दुकान पर बेचता था शराब, पुलिस ने दबोचा

फतेहाबाद। सीआईए रतिया पुलिस ने रेड के दौरान एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से अवैध अंग्रेजी शराब बरामद की है। सीआईए रतिया के एएसआई रिछपाल ने बताया कि एचसी दिनेश कुमार पुलिस टीम सहित अपराध रोकथाम व गश्त के तहत लाली रोड, थाना सदर रतिया क्षेत्र में मौजूद थे। इस दौरान सूचना के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई की।

डोडा पोस्त सहित युवक को किया गिरफ्तार

फतेहाबाद। नशा मुक्ति एवं अपराध रोकथाम अभियान के तहत एएनसी सेल फतेहाबाद टीम ने 11 किलोग्राम डोडा पोस्त के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया है। एएनसी सेल प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद राय ने बताया कि बीती रात एएसआई भूपेंद्र सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम अपराध रोकथाम हेतु नेशनल हाइवे 9 पर गांव दरियापुर बस अड्डा पर मौजूद थी। इस दौरान टीम को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि बग्गा निवासी गांव नागपुर, थाना रतिया नशीला पदार्थ लेने के लिए गिलाखेड़ा गांव की ओर आने वाला है। सूचना के आधार पर पुलिस ने युवक को काबू कर लिया।

पंजाब आपदा में जरूरतमंदों की मदद कर 'हीरो' बने फतेहाबाद के गायक मनकीरत औलख

सुरेन्द्र असीजा ⏭फतेहाबाद

बाढ़ग्रस्त इलाकों में लगातार सहायता पहुंचा रहे हरियाणा के पंजाबी गायक मनकीरत औलख मूल रूप से फतेहाबाद जिले के गांव बहबलपुर के रहने वाले है। फतेहाबाद शहर में खेलते हुए बड़े हुए मनकीरत के कई रिश्तेदार आज भी फतेहाबाद शहर में रहते हैं और अक्सर मनकीरत यहां आते रहे हैं। अब यहां मानसून में बाढ़ आई तो पूरा पंजाब जलप्रलय का शिकार हो गया। ऐसे में आपदा का शिकार हुए लोग जहां सरकार द्वारा मदद न मिलने से निराश दिखाई दिए तो मनकीरत औलख पंजाब के बाढ़ पीड़ितों के लिए नई उम्मीद बनकर आए हैं।

खास बात

- राजनीतिज्ञों को अखर रहे औलख, सप्ताहभर में ही पंजाबभर में बनाई 'दानवीर' के तौर पर पहचान

5 करोड़ रुपये देने का ऐलान, इससे पहले भी 10 ट्रैक्टर एवं 7 ट्रक राहत सामग्री लेकर पंजाब पहुंचे

कुल 100 नए ट्रैक्टर देने का लक्ष्य

मनकीतर ने पंजाब के बाढ़ पीड़ितों के लिए न केवल 5 करोड़ रुपए देने का ऐलान किया है बल्कि कुछ दिन पहले वे 10 नए ट्रैक्टर एवं 7 ट्रक राहत सामग्री के लेकर पंजाब में पहुंचे थे। उनका लक्ष्य बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए कुल 100 ट्रैक्टर देने का है। मनकीरत का साफ कहना है कि वह बेशक हरियाणा में जन्मे हैं लेकिन प्रसिद्धि उन्हें पंजाबी गीतों व पंजाब से मिली है। मनकीरत औलख ग्लोबल सिख एवं खालसा एड के साथ मिलकर बाढ़ग्रस्त इलाकों में काम कर रहे हैं। चाहे अन्य संगठन भी खूब मदद कर रहे हैं लेकिन जिस तरह से फतेहाबाद से जाकर मनकीरत ने एक छोटे भाई की भूमिका का निर्वहन किया है उससे दोनों राज्यों का भाईचारे की मिसाल बना है तो दूसरे लोगों को भी इससे प्रेरणा मिली है।

फतेहाबाद। मनकीरत औलख का लोगों की मदद के लिए आभार जताते पंजाब सीएम भगवंत मान।

धारीवाल कस्बे का किया दौरा

गौरतलब है कि अपनी टीम के साथ मनकीरत औलख ने 4 सितम्बर को पंजाब के गुरदासपुर के धारीवाल कस्बे में बाढ़ग्रस्त इलाके का दौरा किया था और बाद में राहत शिविर में भी पहुंचे थे। उनका साफ कहना है कि खालसा एड की टीम के साथ संपर्क कर जहां पर भी जरूरतमंद हैं, वहां पर उनकी टीम खुद पहुंच कर यह राहत सामग्री पीड़ितों में बांट रही है।

पंजाब के सीएम ने जताया आभार

खास पहलू यह है कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने पंजाबी गायक मनकीरत औलख को खुद वीडियो कॉल कर उन्हें साधुवाद देते हुए पंजाब के लिए किए गए कामों को लेकर धन्यवाद किया। इस बातचीत के दौरान मनकीरत औलख ने मान के स्वास्थ्य के बारे में पूछा और उन्हें जल्दी लोगों के बीच आने को कहा। भगवंत मान ने उन्हें बताया कि वह जल्द आएंगे और फिलहाल किसानों के कर्ज माफी को लेकर विचार किया जा रहा है।

प्रति एकड़ किसान को 3 से 5 लाख रुपये का नुकसान

जलभराव से गोभी की 90% फसल बर्बाद रेट बढ़कर 100 रुपये प्रति किलो पहुंचे

फतेहाबाद। बरसात से खराब हुई गोभी की फसल व बैठक में किसानों की मांगों को लेकर चर्चा करते किसान सभा के पदाधिकारी। फोटो: हरिभूमि

जिले में करीब 8 हजार एकड़ में होती है गोभी की पैदावार

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

भारी बारिश के कारण फतेहाबाद के एरिया में गोभी की फसल करीब 90 प्रतिशत बर्बाद हो चुकी है। प्रति एकड़ किसान को 3 से 5 लाख रुपए का नुकसान हुआ है। पहले नुकसान का अंदाजा कम लगाया जा रहा था। पंजाब व राजस्थान सहित कई राज्यों में जाने वाली फतेहाबाद की गोभी फिलहाल के हालातों के चलते स्थानीय मंडी में ही आने को तरस गई है। इसके कारण गोभी का भाव भी 80 से 100 रुपये प्रति किलो तक हो गया है। बता दें कि फतेहाबाद और जाखल का एरिया गोभी की पैदावार के लिए मुख्य रूप से जाना जाता है, लेकिन इस मानसून में हुई भारी बारिश के चलते गोभी की पैदावार में इस बार पिछड़ गया है। गांव एमपी रोही, कुम्हारिया और फतेहाबाद शहर के नजदीक लगती दर्जनों ढाणियों व गांव खेतों में सब्जी की पैदावार ज्यादा की जाती है। फिलहाल फूल गोभी की खेती सबसे ज्यादा की जा रही है। जिला में करीब 8 हजार एकड़ में गोभी की पैदावार ली जाती है।

बर्बाद फसलें और नष्ट मकानों के मुआवजे की मांग को लेकर 15 को डीसी दफ्तर घेरेंगे किसान

- 50 हजार प्रति एकड़ मुआवजा जारी करे सरकार, किसान सभा तहसील मीटिंग में फैसला

फतेहाबाद। अखिल भारतीय किसान सभा तहसील कमेटी फतेहाबाद की मीटिंग शहीद उधम सिंह भवन में संपन्न हुई। इस मीटिंग की अध्यक्षता पतराम ढाणी ईशर ने की और संचालन सचिव ओमप्रकाश फगेडिया ने किया। इस मीटिंग में किसान सभा के जिला उपप्रधान जगतार सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे। किसान नेता जगतार सिंह ने बताया के जिले भर के दर्जनों गांवों में भारी बारिश के चलते जल भराव है। इससे किसानों की फसलें अधिकतर जगहों पर पूरी तरह से बर्बाद हुई है, इसके साथ ही गांवों में निचले स्थान पर रहने वाले लोगों के घरों, ढाणियों और खास तौर पर गरीब लोगों के मकानों की भी छतें गिर गई हैं और मकान में दरार आ गई हैं। किसान सभा उप प्रधान धर्मपाल कुम्हारिया ने बताया कि इस भारी बारिश के चलते फतेहाबाद तहसील के बड़ोपल, चिंदड़, धारणिया, कुम्हारिया, भूथन कलां, बीघड़, खारा खेड़ी, खजूरी, मोहम्मदपुर रोही, धांगड, आदि अनेक गांवों में नरमा, कपास की फसल बड़े पैमाने पर है जो की पूरी तरह से बर्बाद हो चुकी है। इसके साथ ही मूंग, गवार, धान, सब्जियों, हरे चारे आदि की फसलें भी पूरी तरह से नष्ट हो गई हैं। इस तमाम हालत के चलते किसान सभा 15 सितंबर सोमवार को डीसी दफ्तर फतेहाबाद पर एक बड़ा प्रदर्शन करेगी जिसमें जिले भर के किसान व मजदूर हिस्सा लेंगे।

जिले में सब्जी बिजाई का रकबा

⏭गोभी	4000 एकड़
⏭भिंडी	800 से 1000 एकड़
⏭मिर्च	500 से 700 एकड़
⏭बैंगन	300 से 500 एकड़

फसल पैदावार में 50 प्रतिशत तक कमी

गांव एमपी रोही के किसान महावीर गुज्जर, गांव कुम्हारिया के करण गोदारा आदि ने बताया कि इस बरसाती सीजन में हुई भारी बारिश के कारण उनकी गोभी की फसल को काफी नुकसान हुआ है। गोभी के खेतों में पानी भरने के कारण फसल बर्बाद हो गई। फसल बर्बाद होने से किसानों को लाखों का नुकसान हो गया है। किसानों ने बताया कि एक एकड़ में करीब 25-30 टन गोभी की पैदावार होती है। अबकी बार बारिश ज्यादा होने से गोभी की फसल पानी में डूब कर खराब हो गई। पिछले वर्ष गर्मी ज्यादा होने व कम बरसात होने के कारण गोभी की फसल 50 प्रतिशत तक कम हुई थी। इस गोभी की फसल में जलभराव होने के कारण गोभी के फूलों में सुंडी का भी प्रकोप है।

रतिया। पकड़े गए होटल संचालक। फोटो: हरिभूमि

देह व्यापार गिरोह का भंडाफोड़ तीन होटल संचालक गिरफ्तार

- रतिया के चार होटलों में छापेमारी

हरिभूमि न्यूज ⏭रतिया

पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के दिशा-निर्देशन और डीएसपी नर सिंह के नेतृत्व में सीएम प्लाईंग एवं रतिया पुलिस की सयुंक्त टीम ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए अनैतिक देह व्यापार के अवैध धंधे का पर्दाफाश किया है। पुलिस टीम ने चार होटलों पर छापेमारी कर कई आरोपियों को काबू किया और होटल संचालकों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। शनिवार को इस बारे जानकारी देते हुए डीएसपी नर सिंह ने बताया कि उन्हें विशेष सूचना प्राप्त हुई थी कि पालिका बाजार रतिया स्थित नो टेंशन होटल, डे नाइट होटल, ब्राउन हर्ट होटल तथा ताज होटल में बाहरी युवतियों को बुलाकर अनैतिक देह व्यापार कराया जा रहा है। सूचना की पुष्टि के पश्चात न्यायालय से सर्च वारंट प्राप्त कर थाना संयुक्त टीम, महिला पुलिसकर्मियों एवं उडऩ दस्ते की संयुक्त टीम ने इन होटलों में छापेमारी की। छापेमारी के दौरान विभिन्न होटलों के कमरों से कई युवक-युवतियां आपत्तिजनक स्थिति में पाए गए।

एक मौके से फरार

पुलिस ने इस मामले में होटल संचालक पुनीत पुत्र कृष्ण लाल निवासी सिंथला, अजय कुमार पुत्र अशोक कुमार निवासी लांबा तथा सुमित कुमार पुत्र श्याम सुंदर निवासी टिब्बा कॉलोनी रतिया को मौके से काबू किया है। वहीं, ताज होटल का मालिक सोनू पुत्र कृष्ण कुमार मौके से फरार हो गया, जिसकी तलाश जारी है। सभी आरोपियों के खिलाफ थाना शहर रतिया में धारा 3, 4, 5 - अनैतिक देह व्यापार (निवारण) अधिनियम, 1956 के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। डीएसपी ने कहा कि फतेहाबाद पुलिस का यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। जिले में इस प्रकार के अनैतिक कार्य किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे।

लालच देकर आरोपी महिला ने फंसाया

- नाबालिग से यौन शोषण मामले का खुलासा

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

सिरसा जिले में दो युवक और उनकी महिला दोस्त द्वारा मिलकर एक नाबालिग के साथ यौन शोषण करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। डीएसपी राजेश कुमार ने शनिवार को बताया कि आरोपी महिला ने नाबालिग को लालच देकर फंसाया और उसके साथ सिरसा के एक होटल में गलत काम करवाया।

पीड़िता की मां के समक्ष उसके बयान दर्ज किए गए, जिनमें उसने महिला पूजा व नाथूसरी चौपटा के रहने वाले मनोज पर रेप करने के आरोप लगाए। पीड़िता के बयान के आधार पर आरोपियों को खिलाफ पोक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज किया। इस मामले में आरोपी महिला, मनोज व एक अन्य युवक को भी गिरफ्तार कर लिया है।

प्राथमिक उपचार के महत्व के बारे में बताया

सिरसा। नेशानल कॉलेज ऑफ एजुकेशन महाविद्यालय में यूथ रेडक्रॉस कमेटी की तरफ से विश्व प्राथमिक चिकित्सा दिवस पर एक्सटेंशन लेक्चर का आयोजन किया गया। जिसमें सहायक सचिव, जिला रेडक्रॉस सोसायटी गुरमीत सिंह सैनी, ने मुख्य विषय प्राथमिक चिकित्सा और जलवायु परिवर्तन पर अपना व्याखयान दिया। उन्होंने आपातकालीन और दुर्घटना की स्थिति में प्राथमिक उपचार के महत्व के बारे बताया। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटना होने पर व्यक्ति को एक कुशल प्राथमिक सहायता प्रदान कर डॉक्टरी सहायता मिलने तक उसके जीवन को बचाया जा सकता है।

नशीली गोलियों सहित तस्कर गिरफ्तार

- सीआईए पुलिस टीम की कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

सीआईए टोहाना पुलिस टीम ने कॉमर्शियल मात्रा में नशीली दवाओं के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। सीआईए टोहाना प्रभारी उपनिरीक्षक अशोक कुमार ने बताया कि एसआई जग्गा सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम गश्त व नशा रोकथाम अभियान के तहत रेलवे फाटक सिम्बल रोड, आईटीआई टोहाना के पास मौजूद थी। इस दौरान टीम को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि सुजीत उर्फ सुरजीत पुत्र सुरजभान निवासी नारका मोहल्ला, रतिया नशीली गोलियों की तस्करी कर रहा है और रेलवे स्टेशन टोहाना की टूटी दीवार के पास ग्राहक का इंतजार कर रहा है।

टोहाना। नशीली दवाओं सहित पकड़ा गया युवक। फोटो: हरिभूमि

153 नशीली दवाइयां बरामद

सूचना पर तुरंत कार्रवाई करते हुए डीएसपी उमेद सिंह टोहाना की मौजूदगी में रेड की गई और आरोपी को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। नियमानुसार तलाशी के दौरान आरोपी के कब्जे से 16 स्ट्रीप में कुल 153 नशीली टैबलेट्स बरामद हुई। बरामद दवाओं को मौके पर ही सील कर पुलिस कब्जे में लिया गया। आरोपी के विरुद्ध थाना शहर टोहाना में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

केंद्रीय राज्यमंत्री ने सिरसा में घग्घर क्षेत्र के गांवों का दौरा कर स्थिति का लिया जायजा

गांव फरवाई में ग्रामीणों से की बातचीत

केंद्र और राज्य सरकार बाढ़ से प्रभावित किसानों को लेकर चिंतित: मंत्री सतीश चंद्र

हरिभूमि न्यूज. सिरसा।

केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्रालय राज्यमंत्री सतीश चंद्र दूबे ने शनिवार को जिला सिरसा के घग्घर नदी के समीपवर्ती गांवों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने घग्घर नदी के साथ लगते गांव फरवाई, मीरपुर, अहमदपुर और केलनिया सहित आसपास के इलाकों की स्थिति का जायजा लिया। दौरे के दौरान राज्यमंत्री सतीश चंद्र दूबे ने ग्रामीणों से सीधा संवाद किया और उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना।

सिरसा। केंद्रीय राज्यमंत्री सतीश चंद्र दूबे प्रभावित ग्रामीणों से बातचीत कर रिलिफ किट वितरित करते।

ग्रामीणों ने पानी निकासी, खेती को हो रहे नुकसान और दैनिक जीवन से जुड़ी परेशानियों की जानकारी दी। मंत्री ने आश्वासन दिया कि उनकी समस्याओं का शीघ्र समाधान किया जाएगा।

ओटू वियर का किया निरीक्षण

गांव फरवाई में ग्रामीणों से बातचीत करते हुए मंत्री सतीश चंद्र दूबे ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हरियाणा और पंजाब में आई बाढ़ को लेकर चिंतित है। प्रधानमंत्री ने उनकी इयूटी सिरसा के प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण करने और समस्याओं को जानने के लिए लगाई है और समस्याओं के समाधान का प्रयास तत्परता किया जाएगा। विपदा की इस घड़ी में केंद्र व राज्य सरकार आमजन के साथ है और जो भी समस्याएं या मांग रखी गई है, उन सबके बारे में केंद्र व राज्य सरकार को अवगत करवाया जाएगा ताकि उनका समाधान हो सके। उन्होंने कहा कि वे किसान के बेटे हैं और किसानों के दुख दर्द को अच्छी तरह समझते हैं। इसके बाद मंत्री सतीश चंद्र दूबे ने सिरसा के ओटू वियर का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों से घग्घर नदी के जलस्तर, सुरक्षा प्रबंधों तथा बाढ़ नियंत्रण से जुड़ी व्यवस्थाओं के बारे में विस्तार से जानकारी ली। मंत्री ने निर्देश दिए कि किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए और ग्रामीणों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

नकली खाद, कीटनाशक व बीज बेचने वालों पर होगी कार्रवाई

डबवाली। कृषि विभाग की ओर से नकली खाद, कीटनाशक एवं बीजों की बिक्री पर अंकुश लगाने और किसान हितों की रक्षा के उद्देश्य से शनिवार को सिरसा जिले के मंडी डबवाली स्थित किसान भवन में खाद बीज विक्रेताओं की बैठक हुई। बैठक में हरियाणा बीज विकास निगम के चेयरमैन देव कुमार शर्मा भी उपस्थित रहे। बैठक में विक्रेताओं को फर्टिलाइजर कंट्रोल ऑर्डर (एफसीओ) 1985 के नियमों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। चेयरमैन देव कुमार शर्मा ने कहा कि कुछ विक्रेता मूल बीजों में निम्न गुणवत्ता वाले बीज मिलाकर बेचते हैं, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने विक्रेताओं को साफ-सुथरा कारोबार करने के निर्देश दिए।

फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में बढ़ा निवेश

■ इक्विटी फंड्स का नेट इनफ्लो 22% तक घटा ■ एएमएफआई ने अगस्त 2025 के आंकड़े जारी किए ■ अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा

बिजनेस डेस्क

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) ने अगस्त 2025 के निवेश और रिडेम्पशन के लेटेस्ट आंकड़े जारी कर दिए हैं। ये आंकड़े म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री के ताजा रुझानों की दिलचस्प तस्वीर पेश करते हैं। अगस्त 2025 में निवेशकों ने जहां एक ओर इक्विटी फंड्स में लगातार पैसे डाले हैं, वहीं डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर पैसे निकाले गए हैं। आंकड़ों के मुताबिक अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा। कुल नेट इनफ्लो 33,430 करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई 2025 के 42,702 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 22% कम है। हालांकि यह गिरावट दिखाती है कि निवेशक थोड़े सावधान हो गए हैं, लेकिन यह भी सच है कि यह लगातार 54वां महीना है जब इक्विटी फंड्स में नेट इनफ्लो देखने को मिला।

फ्लेक्सी, मिड और लार्ज कैप में इनफ्लो बढ़ा

अगस्त में सबसे ज्यादा निवेश फ्लेक्सी कैप फंड्स में आया। इस कैटेगरी में 7,679 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ, जो जुलाई के 7,654.33 करोड़ रुपये के नेट-इनफ्लो के मुकाबले थोड़ा बेहतर रहा। मिड कैप फंड्स में भी 5,330 करोड़ रुपये का इनफ्लो रहा, जबकि जुलाई में यह 5,182 करोड़ रुपये था। दिलचस्प बात यह रही कि लार्ज कैप फंड्स में 2,835 करोड़ रुपये का नेट निवेश आया, जो जुलाई के 2,125 करोड़ रुपये से 33% ज्यादा रहा। हालांकि, स्मॉल कैप फंड्स में निवेश की रफ्तार थोड़ी धीमी पड़ी और इसमें नेट इनफ्लो जुलाई के 6,484 करोड़ रुपये से घटकर अगस्त में 4,993 करोड़ रुपये रह गया।

डेट फंड्स में निकासी का दबाव

अगस्त 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स ने बड़ा झटका खाया। कुल मिलाकर इस कैटेगरी से 7,980 करोड़ रुपये का नेट आउटफ्लो हुआ। यह तब है जब जुलाई 2025 में इन्हीं फंड्स में 1.07 लाख करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ था। कई सब-कैटेगरी जैसे कॉरपोरेट बॉन्ड फंड्स, बैंकिंग एवं पीएसयू फंड्स और गिल्ट फंड्स से पैसे निकाले गए। इसका बड़ा कारण कॉर्पोरेट्स और संस्थागत निवेशकों की तरफ से मनी मार्केट और लिक्विड फंड्स से निकासी बताई जा रही है, जो आमतौर पर तिमाही खत्म होने के बाद होती है।

हाइब्रिड फंड्स का आकर्षण बरकरार

हाइब्रिड फंड्स में निवेशकों का भरोसा जारी रहा। अगस्त में इसमें 15,294 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ। हालांकि यह जुलाई के 20,879 करोड़ रुपये से कम है, लेकिन फिर भी इससे संकेत मिलता है कि निवेशक बैलेंस्ड और डायनैमिक स्ट्रेटजी वाले फंड्स को पसंद कर रहे हैं।

गोल्ड ईटीएफ और इंडेक्स फंड्स रहे फेवरिट

गोल्ड ईटीएफ अगस्त में निवेशकों के बीच काफी पॉपुलर रहे. इनमें 2,190 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो आया, जो जुलाई के 1,256 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 74% ज्यादा है. इससे यह भी पता चलता है कि सोने की कीमतों में लगातार मजबूती और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौजूदा चुनौतियों के कारण निवेशक गोल्ड को सुरक्षित ऑप्शन मान रहे हैं। इंडेक्स फंड्स और अन्य ईटीएफ का आकर्षण भी बरकरार है। अगस्त में इंडेक्स फंड्स का एयूएम करीब 3.04 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 1,503 करोड़ रुपये रहा, जबकि अन्य ईटीएफ का एयूएम करीब 8.42 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 7,244 करोड़ रुपये रहा।

एनएफओ कलेक्शन में भारी गिरावट

जुलाई में म्यूचुअल फंड्स की 30 नई स्कीम्स या न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) लॉन्च हुए थे और उनके जरिये 30,416 करोड़ रुपये जुटाए गए थे। लेकिन अगस्त में एनएफओ की संख्या घटकर 23 और जुटाई गई रकम सिर्फ 2,859 करोड़ रुपये रह गई।

फोलियो नए रिकॉर्ड पर, कुल एयूएम घटा

इंडस्ट्री का कुल एयूएम अगस्त में 75.19 लाख करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई के 75.36 लाख करोड़ रुपये से मामूली रूप से कम है, लेकिन इस दौरान फोलियो की कुल संख्या बढ़कर 24.89 करोड़ हो गई। जुलाई में यह संख्या 24.57 करोड़ थी। यानी निवेशकों के लगभग 32 लाख नए खाते जुड़े, जो यह दिखाता है कि छोटे निवेशक लगातार इस इंडस्ट्री का हिस्सा बन रहे हैं। अगस्त 2025 का महीना इस लिहाज से अहम रहा कि इक्विटी फंड्स में पैसे आते रहे, लेकिन रफ्तार धीमी हुई। फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में निवेशकों का भरोसा दिखा, जबकि स्मॉल कैप में सावधानी दिखी। दूसरी ओर, डेट फंड्स ने करारा झटका खाया. हाइब्रिड फंड्स और गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को आकर्षित करते रहे।

निवेश का जैकपॉट : कुछ इक्विटी फंड्स ने 10 साल में दिया 533 से 678% तक रिटर्न

लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड सबसे बेहतर

सात फंड ऐसे हैं, जिनमें 20% सालाना से अधिक रिटर्न निवेशको को मिला

इन फंड्स को खरीदने वाले निवेशक भी मालामाल, जमकर किया निवेश

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेशक हैं या निवेश करने जा रहे हैं तो एक बार बाजार के बारे में रिसर्च जरूर कर लें। इससे आपको निवेश में आसानी रहेगी और पैसे का नुकसान नहीं होगा। बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को जान लें। इसके बाद निवेश करेंगे जो मुनाफे में ही रहेंगे। म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें। म्यूचुअल फंड लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे अच्छे विकल्पों में एक माने जाते हैं। निवेश की अवधि जितना अधिक होगी, कंपाउंडिंग का उतना ज्यादा फायदा मिलेगा। लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड स्कीम निवेशकों के लिए जैकपॉट साबित हुई हैं। इनमें से 7 फंड तो ऐसे हैं, जिनमें 20 फीसदी सालाना से अधिक रिटर्न मिला है। इनका 10 साल में एबसॉल्यूट रिटर्न 533 से 678 फीसदी रहा है। इसका मतलब है कि इन्होंने इस अवधि में निवेशकों का पैसा 6 से 7.5 गुना बढ़ा दिया। हमने इस रिपोर्ट में ईटीएफ को शामिल नहीं किया है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें

●

बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को पहचान लें

निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 22.78% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,78,532 रुपये (7.79 लाख)
- रेटिंग : 5 स्टार
- कुल एसेट्स : 64,821 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.64% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 5 साल का रिटर्न : 21.86% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,22,124 रुपये (7.22 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 11,396 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.58% (31 अगस्त, 2025)

एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.47% सालाना
- लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,857 रुपये (6.44 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 36,294 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.69% (31 अगस्त, 2025)

एक्सिस स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.46% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,622 रुपये (6.43 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 25,569 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.57% (31 अगस्त, 2025)

इन्वेस्को इंडिया मिड कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.39% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,39,594 रुपये (6.40 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 8,063 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.56% (31 अगस्त, 2025)

एसबीआई स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.30% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,34,828 रुपये (6.35 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 35562.96 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.73% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.25% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,32,195 रुपये (6.32 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 28,758 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.72% (31 अगस्त, 2025)

क्या हैं इक्विटी फंड

इक्विटी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो मुख्य रूप से शेयर बाजार में निवेश करता है। इसका उद्देश्य निवेशकों को शेयर बाजार में निवेश करने का अवसर प्रदान करना है, जिससे वे अपने निवेश पर अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकें।

इक्विटी फंड के प्रकार

1. **लार्ज-कैप फंड:** ये फंड बड़े कैप शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर अच्छी तरह से स्थापित कंपनियों के शेयर होते हैं।
2. **मिड-कैप फंड:** ये फंड मध्यम आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर तेजी से बढ़ने वाली कंपनियां होती हैं।
3. **स्मॉल-कैप फंड:** ये फंड छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न की संभावना के साथ आते हैं।
4. **सेक्टोरल फंड:** ये फंड विशिष्ट क्षेत्रों या उद्योगों में निवेश करते हैं, जैसे कि टेक्नोलॉजी, फार्मास्यूटिकल्स, या ऑटोमोबाइल।

इक्विटी फंड के लाभ

1. **विविधीकरण:** इक्विटी फंड निवेशकों को विविधीकरण का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे अपने निवेश को विभिन्न शेयरों में फैला सकते हैं।
2. **पेशेवर प्रबंधन:** इक्विटी फंड पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं, जो निवेशकों के लिए निवेश के निर्णय लेते हैं।
3. **लिक्विडिटी:** इक्विटी फंड निवेशकों को अपने निवेश को आसानी से बेचने और नकदी प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

इक्विटी फंड के जोखिम

1. **बाजार जोखिम:** इक्विटी फंड शेयर बाजार में निवेश करते हैं, जो बाजार की अस्थिरता के कारण जोखिम भरा हो सकता है।
2. **कंपनी-विशिष्ट जोखिम:** इक्विटी फंड विशिष्ट कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो कंपनी-विशिष्ट जोखिमों के अधीन हो सकते हैं।
3. **इक्विटी फंड:** निवेशकों के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है जो शेयर बाजार में निवेश करने के इच्छुक हैं और जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं

करोड़पति बनाने वाली स्कीमों में लोग कर रहे जमकर निवेश, आठ गुणा तक बढ़ा पैसा

सिर्फ 9 साल में छू लिया आसमानी आंकड़ा, 28,265 करोड़ कर डाले निवेश, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश लगातार बढ़ रहा

अपने पैसे को लोग अलग-अलग स्कीम में निवेश करते हैं। किसी स्कीम में रिटर्न कम मिलता है तो किसी में ज्यादा। वहीं जो लोग जोखिम लेते हैं, वे एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। यह एक ऐसी स्कीम है जिसमें लगातार छोटी रकम के निवेश से ही व्यक्ति करोड़पति बन सकता है। एक नई रिपोर्ट के अनुसार, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में हर महीने जमा होने वाला पैसा पिछले नौ सालों में लगभग आठ गुना बढ़ गया है। व्हाइटओक कैपिटल म्यूचुअल फंड की एक रिपोर्ट बताती है कि अगस्त 2016 में एसआईपी के जरिए कुल 3,497 करोड़ रुपये आए थे। अगस्त 2025 तक ये आंकड़ा बढ़कर 28,265 करोड़ रुपये हो गया है। इससे पता चलता है कि निवेशकों का एसआईपी पर भरोसा बढ़ रहा है। वे इसे पैसे बनाने का एक अच्छा तरीका मान रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह लगातार वृद्धि दिखाती है कि एसआईपी में निवेशकों का विश्वास बढ़ रहा है।

कितना रहा रिटर्न : अगस्त 1996 से अगस्त 2025 के बीच एसआईपी से मिलने वाला सबसे ज्यादा रिटर्न 55.6 प्रतिशत रहा। वहीं, सबसे कम रिटर्न -24.6 प्रतिशत रहा। लेकिन अगर औसत रिटर्न की बात करें, तो यह 14-16 प्रतिशत के आसपास रहा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने कितने समय के लिए निवेश किया है।

निवेश का कौन सा समय सही : रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मार्केट में कब निवेश करना है, यह इतना जरूरी नहीं है जितना कि निवेश करते रहना। अगर आपने मार्केट के टॉप पर भी एसआईपी शुरू की थी, तो भी आपको लंबे समय में अच्छा फायदा हुआ होगा। उदाहरण के लिए, अगर किसी ने जनवरी 2008 में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी शुरू की थी, जो कि ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस से ठीक पहले का समय था, तो भी अगस्त 2025 तक उसका 21.2 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 75.23 लाख रुपये हो गया होता। इस पर उसे लगभग 13 प्रतिशत का एक्सआईआरआर मिला होता। एक्सआईआरआर एक तरीका है जिससे पता चलता है कि आपके निवेश पर आपको कितना रिटर्न मिला है।

किस कैटेगरी का कितना रिटर्न : दिलचस्प बात यह है कि रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि मिड-कैप एसआईपी ने लॉन्ग टर्म में लार्ज-कैप और स्मॉल-कैप कैटेगरी से बेहतर रिटर्न दिया है। मिड-कैप एसआईपी का एवरेज रिटर्न 17.4 प्रतिशत रहा, जबकि लार्ज-कैप का 13 प्रतिशत और स्मॉल-कैप का 14.7 प्रतिशत रहा।

कोई भी लोन लेने से पहले फायदे और नुकसान को जान लें

फिक्स्ड, फ्लोटिंग या फिर हाइब्रिड होम लोन के लिए कौन-सी ब्याज दर बेहतर, फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते जब ब्याज दरें बढ़ रही हों

तैयारी

बिजनेस डेस्क

जब लोन पर घर खरीदने जार रहे हों तो एक बार बैंकों की ब्याज दरों को जांच लें। किसी जानकारी से सलाह ले लें। इससे आपको परेशानी नहीं होगी और आसानी से घर खरीद सकेंगे। अक्सर जब लोग घर खरीदने के लिए होम लोन लेते हैं, तो सबसे बड़ा सवाल यही होता है कि किस तरह का इंटरेस्ट रेट चुना जाए। फिक्स्ड, फ्लोटिंग और हाइब्रिड तीनों विकल्पों के अपने फायदे और नुकसान हैं। सही चुनाव करने से आपकी ईएमआई और लंबे समय की फाइनेंशियल प्लानिंग पर बड़ा असर पड़ता है। इसलिए इस सवाल का जवाब लोन लेने से पहले ही जान लेंगे तो आसानी रहेगी।

फिक्स्ड इंटरेस्ट रेट लोन

- फिक्स्ड रेट में आपकी ईएमआई पूरी लोन अवधि या शुरुआती कुछ साल तक एक जैसी रहती है। इसका फायदा यह है कि ब्याज दरें बढ़ने पर भी आपकी ईएमआई नहीं बदलती। इससे आपको हर महीने का खर्च आसानी से मैनेज करने में मदद मिलती है। हालांकि, इसका नुकसान यह है कि अगर ब्याज दरें घट जाएं तो इसका फायदा आपको नहीं मिलेगा। साथ ही, शुरुआती दरें भी अक्सर फ्लोटिंग से ज्यादा होती हैं। यह विकल्प उन लोगों के लिए बेहतर है, जिन्हें स्थिरता चाहिए और ईएमआई में उतार-चढ़ाव नहीं चाहते।

फ्लोटिंग इंटरेस्ट रेट लोन

- फ्लोटिंग रेट आरबीआई की नीतियों और मार्केट की परिस्थितियों के हिसाब से बदलता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि ब्याज दर घटने पर ईएमआई कम हो जाती है। इससे लंबे समय में यह फिक्स्ड से सस्ता साबित हो सकता है। होम लोन लेने वाले ज्यादातर लोग यही विकल्प चुनते हैं। मार्केट की स्थिति अर्थव्यवस्था में महंगाई और ब्याज दरों की दिशा होम लोन पर सीधा असर डालती है। जब महंगाई बढ़ती है तो बैंक ब्याज दरें ऊपर कर देते हैं ताकि जोखिम कम हो। वहीं स्थिर बाजार में ब्याज दरें अक्सर सस्ती हो जाती हैं। इसलिए टाइमिंग भी अहम फैक्टर है। लेकिन, फ्लोटिंग रेट की अपनी खामियां हैं। अगर ब्याज दर बढ़ जाएं तो **EMI** भी बढ़ जाती है। यह आपका पूरा बजट भी बिगाड़ सकती है। यह विकल्प उन लोगों के लिए ज्यादा सही रहता है, जो लंबे समय तक लोन लेने वाले हैं और ईएमआई में उतार-चढ़ाव सह सकते हैं।

हाइब्रिड इंटरेस्ट रेट लोन

- हाइब्रिड लोन में शुरुआती कुछ सालों तक ईएमआई फिक्स्ड रहती है और उसके बाद यह फ्लोटिंग में बदल जाती है। इस तरह पहले कुछ सालों तक स्थिरता मिलती है और बाद में मार्केट के हिसाब से ब्याज दरें घटने पर फायदा हो सकता है। हालांकि शुरुआती दरें फ्लोटिंग से थोड़ी ज्यादा हो सकती हैं और अगर बाद में ब्याज दरें बढ़ जाएं तो ईएमआई भी बढ़ेगी। यह विकल्प उन लोगों के लिए सही है जो शुरुआत में ईएमआई स्थिर रखना चाहते हैं और आगे चलकर रिस्क लेने को तैयार हैं।

क्या है एक्सपर्ट की राय?

जानकारों का कहना है कि फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते हैं जब ब्याज दरें बढ़ रही हों। ये उन लोगों के लिए ठीक हैं जिन्हें स्थिरता चाहिए या लगता है कि दरें आगे और बढ़ेंगी। वहीं, फ्लोटिंग रेट घटती ब्याज दर वाले माहौल में सही रहते हैं। हाइब्रिड होम लोन उन लोगों के लिए होते हैं जो शुरू में कुछ साल तक निश्चित ईएमआई चाहते हैं, लेकिन आगे चलकर बाजार के हिसाब से ब्याज दरों का फायदा उठाना चाहते हैं।लोन की अवधि का असर लोन का टेन्योर जितना लंबा होगा, कुल ब्याज का बोझ उतना ज्यादा होगा। छोटी अवधि का लोन लेने पर ईएमआई थोड़ी बड़ी होगी लेकिन ब्याज की बचत काफी होगी। इसलिए अपनी क्षमता के हिसाब से संतुलित अवधि चुनना बेहतर रहता है।

लोन लेने की लागत स्थिर

अभी की स्थिति देखें तो लोन लेने की लागत स्थिर हो रही है। आरबीआई की ओर से रेपो रेट में हालिया कटौतियों से ग्राहकों का भरोसा भी बढ़ा है। इस समय फ्लोटिंग रेट होम लोन की ब्याज दर अपेक्षाकृत कम हैं। इसलिए यह उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है जो कुल ब्याज खर्च घटाना चाहते हैं।'होमबायर्स को आखिरी फैसला लेने से पहले कुछ बातों पर जरूर विचार करना चाहिए। जैसे कि अभी अलग-अलग लोन ऑप्शन पर ब्याज दर में कितना फर्क है और लोन अवधि कितनी लंबी है। अगर लोन लंबे समय के लिए है तो फ्लोटिंग रेट से फायदा हो सकता है, क्योंकि आगे चलकर अगर दरें घटती हैं तो कुल ब्याज का बोझ कम होगा।

ऐसे कर सकते हैं प्लानिंग

- **1. वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन :** अपनी वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करें और देखें कि आप कितना होम लोन ले सकते हैं। अपनी आय, व्यय, और बचत को ध्यान में रखें।
- **2. होम लोन की आवश्यकता :** अपने होम लोन की आवश्यकता को निर्धारित करें। आपको कितनी राशि की आवश्यकता है? आप कितने समय में लोन चुकाना चाहते हैं?
- **3. ब्याज दरें और शर्तें :** विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों की ब्याज दरें और शर्तें तुलना करें। सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- **4. लोन की अवधि :** लोन की अवधि का चयन करें जो आपकी वित्तीय स्थिति के अनुसार उपयुक्त हो। लंबी अवधि के लोन में मासिक किस्त कम होती है, लेकिन कुल ब्याज अधिक होता है।
- **5. प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्क :** प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्कों को ध्यान में रखें। ये शुल्क आपके लोन की कुल लागत को बढ़ा सकते हैं।
- **6. क्रेडिट स्कोर :** अपने क्रेडिट स्कोर को जांचें और सुनिश्चित करें कि यह अच्छा है। एक अच्छा क्रेडिट स्कोर आपको बेहतर ब्याज दरों और शर्तों के लिए योग्य बना सकता है।
- **7. विकल्पों की तुलना :** विभिन्न होम लोन विकल्पों की तुलना करें और सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- **8. वित्तीय सलाहकार से परामर्श :** यदि आवश्यक हो, तो वित्तीय सलाहकार से परामर्श लें। वे आपको होम लोन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान कर सकते हैं और आपको सबसे अच्छा विकल्प चुनने में मदद कर सकते हैं।

पांच लाख की रकम को कैसे करें निवेश कि मिले बढ़िया मुनाफा

अक्सर ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की तलाश में रहते हैं निवेशक

प्लानिंग

बिजनेस डेस्क

अगर आपके पास 5 लाख रुपये हैं और आप इन्हें निवेश करना चाहते हैं तो यह रिपोर्ट आपके लिए बेहतर हो सकती है। देखने में आया है कि भारतीय निवेशक हमेशा सुरक्षित और ज़्यादा रिटर्न देने वाले निवेश विकल्पों की तलाश में रहते हैं। अगर आप भी अपनी एकमुश्त रकम को निवेश करना चाहते हैं और इसके लिए बेहतर ऑप्शन की तलाश में हैं एक बार जरूर देखें की आपके लिए पोस्ट ऑफिस की सकीम बेहतर रहेगी, बैंक की एफडी या फिर डेट फंड इनमें से कहा आपको ज्यादा मुनाफा मिल सकता है। निवेश का चुनाव हमेशा व्यक्ति की फाइनेंशियल कंडीशन, गोल्स और रिस्क सहने की क्षमता पर निर्भर करता है। ऐसे में जब 5 लाख या 10 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश की बात आती है तो लोगों के लिए सही विकल्प चुनना और जरूरी हो जाता है क्योंकि इतनी बड़ी रकम को ऐसे ही कहीं भी निवेश नहीं किया जा सकता। ऐसे में बैंक की तरह पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही है। वहीं, हाल के वर्षों में डेट फंड भी एक लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभर रहा है। लोग इसे एफडी से बेहतर रिटर्न देने वाला ऑप्शन मानते हैं। आइए समझते हैं कि अगर 5 लाख रुपये का निवेश कहां ज्यादा मुनाफा दे सकता है।

एकमुश्त निवेश के लिए सही विकल्प चुनना बेहद जरूरी

पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही

अब हाल के वर्षों में डेट फंड भी लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभरा

पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की खासियत

- **सुरक्षा:** ये सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में से एक है क्योंकि ये सरकार द्वारा समर्थित है.
- **निश्चित रिटर्न:** आपको निवेश की शुरुआत में ही ब्याज दर पता चल जाती है, जिससे रिटर्न का अनुमान लगाना आसान हो जाता है।
- **लॉक-इन अवधि:** तमाम टेन्योर के लिए उपलब्ध है, जैसे 1, 2, 3 और 5 साल।
- **रेगुलर ब्याज भुगतान:** आप मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आधार पर ब्याज प्राप्त करना चुन सकते हैं।

5 लाख के निवेश पर कितना होगा मुनाफा

- मान लीजिए कि आप पोस्ट ऑफिस की 5 साल की एफडी में निवेश कर रहे हैं। इस एफडी पर मौजूदा समय में 7.5% ब्याज मिल रहा है। अगर आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए निवेश करते हैं तो आपको 5 साल में 2,24,974 ब्याज मिलेगा और कुल मिलाकर 7,24,974 रुपये मिलेंगे।

डेट फंड की खासियत

- डेट फंड म्यूचुअल फंड की ही एक कैटेगरी है। इसमें खासतौर पर फिक्स्ड-इनकम सिक्योरिटीज जैसे सरकारी बॉन्ड, कॉर्पोरेट बॉन्ड, डिबेंचर, कमर्शियल पेपर और ट्रेजरी बिल में निवेश किया जाता है। इसका रिटर्न मार्केट बेस्ड होता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** डेट फंड तमाम तरह के हैं जैसे- लिक्विड फंड, अल्ट्रा-शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मीडियम ड्यूरेशन फंड और लॉन्ग ड्यूरेशन फंड, ऐसे में आपको डायवर्सिफिकेशन का मौका मिल जाता है।
- **लिक्विडिटी:** ये एफडी की तुलना में ज़्यादा लिक्विड होते हैं, क्योंकि आप अपनी यूनिट्स को किसी भी वर्किंग डे पर बेच सकते हैं (कुछ फंडों में एग्जिट लोड हो सकता है)।
- **प्रोफेशनल मैनेजमेंट :** फंड मैनेजर आपके पैसे का प्रबंधन करते हैं, जो बाज़ार की स्थितियों के आधार पर निवेश का फैसला लेते हैं।

5 लाख के निवेश पर रिटर्न

- डेट फंड का रिटर्न प्रदर्शन पर आधारित होता है और फ्यूचर में बदल सकता है। औसतन, कई डेट फंडों ने पिछले कुछ साल में 6-9% का रिटर्न दिया है। मान लीजिए आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए इसमें निवेश करते हैं और उस पर 9% का रिटर्न मिल रहा है तो 2,69,311 रुपये ब्याज के तौर पर मिलेंगे। इस तरह आपको कुल 5,00,000+2,69,312 = 7,69,312 रुपये मिलेंगे। हालांकि ये उदाहरण केवल अनुमानित है, वास्तविक रिटर्न फंड के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा।

कौन सा विकल्प चुनें?

ये चुनाव आपकी व्यक्तिगत ज़रूरतों पर निर्भर करता है-जैसे जोखिम उठाने की क्षमता, अगर आप बिलकुल भी जोखिम नहीं लेना चाहते और अपनी पूंजी की 100% सुरक्षा चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस एफडी आपके लिए बेहतर है। अगर आप थोड़ा जोखिम ले सकते हैं और एफडी से ज़्यादा रिटर्न चाहते हैं, तो डेट फंड एक अच्छा विकल्प है।

निवेश की अवधि

छोटी अवधि (3 साल से कम) के लिए, पोस्ट ऑफिस एफडी या शॉर्ट-ड्यूरेशन डेट फंड को देखा जा सकता है. लंबी अवधि (3 साल से ज़्यादा) के लिए, इंडेक्सेशन लाभ के कारण डेट फंड टैक्स के लिहाज से ज़्यादा कुशल और बेहतर रिटर्न दे सकता है।

खबर संक्षेप

बाल विवाह रोकथाम को लेकर कार्यक्रम आयोजित

टोहाना। महिला एवं बाल विकास विभाग सुपरवाइजर करमजीत कौर ने शनिवार को गांव कन्हड़ी में घरेलू हिंसा एवं बाल विवाह की रोकथाम को लेकर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत महिलाओं को उनके अधिकारों, सरकारी योजनाओं और घरेलू हिंसा से बचाव के उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। सुपरवाइजर करमजीत कौर ने महिलाओं को जागरूक करते हुए कहा कि समाज के विकास के लिए आवश्यक है कि महिलाएं सुरक्षित और आत्मनिर्भर हों।

पेंसिल पैकिंग के नाम पर ठगी, तीन लोग दबोचे

फतेहाबाद। घर बैठे पेंसिल पैकिंग का काम कर पैसा कमाने का लालच देकर ठगी करने वाले संगठित गिरोह का पर्दाफाश करते हुए साइबर थाना फतेहाबाद पुलिस ने एक महिला सहित तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। साइबर थाना फतेहाबाद को साइबर क्राइम पोर्टल के माध्यम से एक शिकायत प्राप्त हुई थी, जिसमें शिकायतकर्ता कुलविन्द्र कुमार पुत्र रमेश कुमार निवासी खैरपुर, रतिया ने कहा था कि एक अज्ञात व्यक्ति ने फोन कर उसे नटराज पेंसिल कंपनी में घर बैठे काम दिलवाने का झांसा दिया। इस लालच में आकर शिकायतकर्ता ने करीब एक लाख की राशि विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से आरोपियों को ट्रांसफर कर दी।

पालसर के ग्राम सचिवालय में चोरी का आरोपी काबू

फतेहाबाद। गांव पालसर के ग्राम सचिवालय में घुसकर चोरी करने के मामले में भूना पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से चोरीशुदा लैपटॉप बरामद कर लिया है। थाना प्रभारी उपनिरीक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि इस बारे गुरसेवक सिंह निवासी पालसर द्वारा दी गई लिखित शिकायत पर थाना भुना में मामला दर्ज किया गया था। शिकायत के अनुसार, 5 सितंबर की रात ग्राम सचिवालय, पालसर में खिडक़ी तोडक़र एक लैपटॉप चोरी कर लिया गया था। उल्लेखनीय है कि यह लैपटॉप सीएससी सेंटर का था, जिसमें महत्वपूर्ण डाटा संग्रहीत था।

श्री श्याम बगीची धाम में भागवत कथा 14 से

सिरसा। श्री श्याम सेवा ट्रस्ट की ओर से 14 सितंबर से श्री श्याम बगीची धाम में श्रीमद भागवत कथा का आयोजन किया जाएगा। श्री वृंदावन धाम से अनंत हरिदासी मीनू शर्मा प्रवचन करेंगी। श्री श्याम बगीची धाम के मुख्य सेवक पवन गर्ग ने बताया कि 14 सितंबर से 20 सितंबर तक श्री श्याम बगीची धाम में श्रीमद भागवत कथा का आयोजन किया जाएगा। कथा दोपहर 3 बजे से शाम 7 बजे तक होगी। उन्होंने बताया कि वृंदावन से अनंत हरिदासी मीनू शर्मा अपने मुखारविंद से श्रीभागवत अमृत वर्षा करेंगी। उन्होंने बताया कि कथा के दौरान श्री वृंदावन से आए कलाकारों द्वारा भव्य रास किया जाएगा और सुंदर सुंदर झांकियां भी प्रस्तुत की जाएगी। उन्होंने बताया कि कथा से पूर्व 14 सितंबर को दोपहर दो बजे जनता भवन से विशाल मंगल कलश यात्रा का आयोजन किया जाएगा।

हंसता-खेलता जीवन लूट रहा है नशाः भारती

सिरसा। दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में साध्वी कालिंदी भारती ने प्रभु की आलौकिक कथा में निहित गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों के साथ युवा पीढ़ी व नशा, अश्लीलता जैसी निकृष्ट सामाजिक बुराई पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आर्थिक मंदी, बेरोजगारी, निरंतर तनाव व दबाव तथा पल-पल बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने आज युवा पीढ़ी को नशे के भयावह साम्राज्य का पंथिक बना दिया है। स्वतंत्र देश का वासी होते हुए भी वह नशे की गिरफ्त में आकर पराधीनता का जीवन व्यतीत कर रहा है। उन्होंने कहा कि देश के लगभग 73 मिलीयन लोग नशे के आदी हो चुके हैं जिनमें से 24 प्रतिशत की उम्र तो 18 साल से भी कम है। कथा का शुभारंभ पूजन से किया गया।

जमकर की नारेबाजी, अधिकारी को सौंपा पत्र

रोडवेज कर्मचारियों ने मांगों को लेकर 2 घंटे किया विरोध प्रदर्शन

परिवहन मंत्री से बातचीत में मानी गई मांगों को तुरंत लागू कर प्रदेश सरकार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। अधिकारी को मांग पत्र सौंपते यूनियन प्रतिनिधिमंडल। फोटो : हरिभूमि

रोडवेज कर्मचारियों ने हरियाणा रोडवेज वर्कर्स यूनियन सम्बन्धित सर्व कर्मचारी संघ के आह्वान पर फतेहाबाद डिपो पर 2 घंटे का विरोध प्रदर्शन किया। विरोध प्रदर्शन की अध्यक्षता डिपो उप प्रधान राजकुमार बीघड़ ने की व संचालन डिपो सचिव सुबे सिंह धनाना ने किया। सरकार कि नीतियों का विरोध करते हुए कर्मचारियों ने जमकर नारेबाजी की और अधिकारी को मांग पत्र सौंपा। प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों को संबोधित करते हुए उपप्रधान राजकुमार बीघड़ ने कहा कि सरकार रोडवेज कर्मचारियों की मांगों को लेकर गंभीर नहीं है। कर्मचारी शांतिपूर्वक तरीके से आंदोलन कर बातचीत से समस्याओं का समाधान चाहते हैं लेकिन सरकार कर्मचारियों को आंदोलन तेज करने के लिए मजबूर कर रही है। उन्होंने मांग की है विभाग में किलोमीटर स्कीम, स्टेज कैरिज स्कीम 2016 सहित 362 रूटों पर 3658 प्राइवेट परमिट देने का फैसला रद्द किया जाए। निजीकरण, ठेका प्रथा पर रोक लगाई गई। प्रदेश में बढ़ती आबादी के अनुसार विभाग में 10 हजार सरकारी बसें शामिल की जाए। पीपीपी व निजी इलेक्ट्रिक बसों की बजाय विभाग में सरकारी इलेक्ट्रिक बसों को शामिल किया जाए। पुरानी पेंशन स्कीम लागू की जाए। परिचालकों व लिपिकों का वेतनमान अपग्रेड करके 35400 किया जाए। सभी श्रेणियों की वेतन विसंगति दूर हो। हैवी चालक का वेतन 53100 किया जाए। परिचालक से उपनिरीक्षक व निरीक्षक की पदोन्नति होने पर अन्य श्रेणियों की तरह एक वेतन वृद्धि दी जाए। अर्जित अवकाश के सभी लाभ दिए जाएं। कच्चे कर्मचारियों को पक्का किया जाए व खाली पदों पर पक्की भर्ती की जाए। एलटीवी व शिक्षा भत्ते का भुगतान शीघ्र हो।

प्रमुख मांगें

बंद किए गए ओवर टाइम को दोबारा शुरू किया जाए। कौशल रोजगार निगम भंग हो। यूनियन के सुझाव अनुसार तबादला नीति में संशोधन किया जाए। कर्मचारियों के लिए आवासीय कालोनी बनाई जाए। सभी बस अड्डों पर आधुनिक विश्राम गृह बनाए जाए। ड्यूटी के दौरान बीमार या दुर्घटना होने पर अयोग्य कर्मचारियों की मेडिकल आधार पर जबरन रिटायरमेंट बंद हो व हलकी ड्यूटी का प्रावधान किया जाए। हड़ताल के चलते कर्मचारियों पर दर्ज सभी मुकदमें रद्द किए जाए। परिवहन मंत्री के साथ बातचीत में मानी गई मांगों को लागू किया जाए। प्रदर्शन में रोडवेज के सह सचिव विरेन्द्र कुलेरी, इंद्रपाल सहारण, सुनील, गोपाल सिंह, इंदरीश, जावेद खान, राकेश सुथार, धर्मवीर सहित अनेक कर्मचारी मौजूद रहे।

युवा योद्धा कार्यक्रम का जाएगा दूरगामी रचनात्मक राजनीतिक संदेशः दिग्विजय

सिरसा। बैठक को संबोधित करते दिग्विजय चौटाला। फोटो : हरिभूमि

- जजपा के प्रदेशाध्यक्ष दिग्विजय सिंह चौटाला ने कार्यकर्ताओं की ली बैठक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

युवा जोड़ो अभियान की तर्ज पर ही आगामी 23 सितंबर को सिरसा में होने वाले युवा योद्धा सम्मेलन को लेकर शनिवार को युवा जेजेपी के प्रदेशाध्यक्ष दिग्विजय सिंह चौटाला ने कार्यकर्ताओं की बैठक ली। इस मौके पर दिग्विजय सिंह चौटाला ने कहा कि जेजेपी के तत्वावधान में पूरे प्रदेश में उन्होंने युवा जोड़ो कार्यक्रम के तहत करीब 500 गांवों का दौरा किया। चौटाला ने कहा कि इस सम्मेलन से जहां जेजेपी परिवार को मजबूती मिलेगी वहीं इसका पूरे हरियाणा में युवाओं में नया सकारात्मक राजनीतिक संदेश जाएगा।

आवश्यक निर्देश दिए

चौटाला ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम ये युवाओं को चौधरी देवीलाल की नीतियों पर आधारित जेजेपी की कल्याणकारी योजनाओं व कार्यक्रमों से जुड़ने का अवसर मिलेगा। वहीं बैठक की अध्यक्षता कर रहे जेजेपी के जिलाध्यक्ष अशोक वर्मा व जेजेपी के प्रदेश के प्रधान महासचिव प्रो. रणधीर सिंह चीका ने भी इस कार्यक्रम की सफलता के लिए संगठनात्मक स्तर पर आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए युवाओं की अधिकाधिक भागेदारी पर बल दिया।

विश्वकर्मा जयंती उत्सव कार्यक्रम 17 को : जांगड़ा

सिरसा। भाजपा नेता रोहताश जांगड़ा ने कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से भगवान विश्वकर्मा जयंती का राज्य स्तरीय भव्य कार्यक्रम आगामी 17 को होगा जिसमें ऐतिहासिक भीड़ जुटेगी। उन्होंने बताया कि राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा के नेतृत्व में तैयारी पूरी चल रही है जिसमें सुथार, रामगढिया, तरखान, जांगड़ा, धीमान, स्वर्णकार, पांचाल सहित मिस्त्री और निर्माणकार व विश्वकर्मा के दिखाए मार्ग पर चलकर समाज हित में कार्य करने वाले सभी लोग इसमें हजारों की संख्या में पहुंचेगे।

गुरु तेग बहादुर पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार 4 से

- विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों की बैठक में लिया निर्णय

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

श्री गुरु तेग बहादुर के 350वें शहादत वर्ष के उपलक्ष्य में राजकीय नेशनल महाविद्यालय सिरसा में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार 4 अक्तूबर से आरंभ होगा। यह निर्णय शनिवार को पंजाबी लेखक सभा सिरसा, पंजाबी विभाग, राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा व अन्य साहित्यिक संगठनों के प्रतिनिधियों की आयोजित बैठक में लिया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा के मल्टीपर्पज हॉल में किया जाएगा।

छह सत्र में किया जाएगा आयोजन

4 अक्तूबर को प्रातः 10 बजे शुरू होने वाले इस सेमिनार के छह सत्र होंगे जिनमें से एक सत्र में कवि दरबार का आयोजन होगा और एक सत्र में विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों के शोधार्थी अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेंगे जबकि अन्य सत्रों में पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा व अन्य क्षेत्रों से विद्वजन अपने पेपर प्रस्तुत करेंगे। सेमिनार में सहभागिता दर्ज करवाने वाले सभी प्रतिनिधियों को प्रमाण-पत्र प्रदत किए जाएंगे और प्रस्तुत पत्रों/शोधपत्रों को पंजाबी साहित्य अकादमी, लुधियाना की शोध पत्रिका आलोचना में प्रकाशित किया जाएगा और इन पर आधारित एक पुस्तक का संपादन भी किया जाएगा।

भागवत कथा श्रवण से दूर होते मन के विकार

- भागवन कथा के दूसरे दिन सुनाई आत्तमदेव ब्राह्मण की कथा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

श्री बंशीवट कथा समिति के द्वारा प्रभात पैलेस में आयोजित कथा के दूसरे दिन कथा व्यास पंडित सुगन शर्मा ने आत्तमदेव ब्राह्मण कि कथा सुनाई। कथा व्यास ने बताया कि गोकरण के जन्म व अपने भाई धुंधकारी को प्रेत योनि से मुक्त करवाने हेतु श्रीमद्भागवत कथा सुनाने कि कथा सुनाई। श्रीमद्भागवत कथा में भगवान के अवतारों की कथा बार-बार सुननी चाहिए। इससे हृदय का विकार दूर हो जाता है। अपने अवतार के माध्यम से श्री हरी ने मानव जीवन को समझाने का प्रयास किया है। घर में श्रीमद्भगवत की पूजा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जिस घर में सुमति अर्थात पूरा परिवार मिलकर रहता है, उस घर में लक्ष्मी का वास होता है। सुमति संत के संगति व भक्ति भावना एवं निष्ठापूर्वक कर्म करने से आता है। जिस प्रकार एक बार भोजन कर लेने से, एक बार सांस ले लेने से काम नहीं चल सकता है, उसी प्रकार एक बार कथा सुनने से काम कैसे चल सकता है? कथा व्यास ने कहा कि कथा एक संस्कार है, यह ईश्वर की कृपा है, जिसे बार-बार सुनने के बाद जीवन में ईश्वर की कृपा बरसने लगती है। शांति की प्राप्ति होती है। पंडित ने विदुर कि सपत्नी सहित भगवान श्री कृष्ण के प्रति प्रेम कि अद्भुत कथा सुनाई। कथा के दौरान सुंदर भजन प्रस्तुत किए गए, जिस पर श्रद्धालु झूमते नजर आए।

सिरसा। कथा प्रवचन करते कथा वाचक सुगन शर्मा। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

कथा के दौरान इंद्रकुमार चिड़ावेवाला, सुनील गोयल, संजय तायल, राधेश्याम बंसल, रामकुमार जैन, संदीप सोनी, मुनीष शर्मा, संजय गोयल, राजेंद्र जिंदल, दयानंद वर्मा, भवानी शंकर, तरुण, दीपक शर्मा, अश्वनी, रामअवतार सहित शहर के गणमान्य मौजूद थे। कथा के अंत में सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया।

छात्रों को दी फर्स्ट ऐड व सीपीआर की जानकारी

सिरसा। जिला रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा विश्व प्राथमिक सहायता दिवस के अवसर पर विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में छात्र-छात्राओं को प्राथमिक सहायता के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव लाल बहादुर बेनीवाल ने बताया कि आज पूरे विश्व में विश्व प्राथमिक सहायता दिवस मनाया जा रहा है। इस वर्ष की थीम फर्स्ट एड एवं क्लाइमेट चेंज को ध्यान में रखते हुए बीती 11 से 13 सितम्बर तक जिले के विभिन्न विद्यालयों जैसे राजकीय माध्यमिक विद्यालय काशी का बास, राजकीय उच्च विद्यालय मिठनपुरा, राजकीय माध्यमिक विद्यालय मीरपुर, अहमदपुर, शहीदांवाली, जिला शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थान डिंग तथा महाविद्यालयों जैसे राजकीय महिला महाविद्यालय, जेसीडी पीजी कॉलेज, जेसीडी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन और लॉर्ड शिवा स्कूल ऑफ नर्सिंग में डमी प्रैक्टिकल के माध्यम से प्राथमिक सहायता व सीपीआर की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

एनएसएस शिविर में पढ़ाया स्वच्छता का पाठ

भूना। विद्यालय परिसर में साफ-सफाई करते हुए स्वयंसेवक।

भूना। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूना में शनिवार को एनएसएस का एक दिवसीय विशेष शिविर आयोजित किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सेवा की भावना को विकसित करना रहा। शिविर की शुरुआत एनएसएस वॉलिंटियर्स द्वारा विद्यालय प्रांगण की साफ-सफाई से हुई। इसके बाद विद्यार्थियों ने पौधारोपण कर परिसर को हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया। वॉलिंटियर्स ने स्वच्छता पर आधारित जागरूकता नाटक का मंचन कर उपस्थित जनसमूह को साफ-सफाई के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम अधिकारी राजकुमार सुथार ने 105 वॉलिंटियर्स को एनएसएस के आदर्श वाक्य 'स्वयं से पहले आप' की व्याख्या करते हुए उन्हें एनएसएस के उद्देश्यों, नियमों और चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में वार्ड नंबर तीन के प्रमुख समाजसेवी ललित सोनी ने शिरकत की।

भगत प्रह्लाद को दिए वचनों से 33 करोड़ जीवों का हुआ उद्धारः संदीप

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

बिश्नोई सभा के 51वें स्थापना दिवस पर श्री गुरु जंभेश्वर मंदिर में चल रही कथा के पांचवे दिन संत संदीप ने बताया कि विष्णु भगवान ने सतयुग में प्रह्लाद भगत को वचन दिया था कि उनके जो 33 करोड़ अनुयायी है, उनका उद्धार करूंगा। जिसके फलस्वरूप 5 करोड़ भगत प्रह्लाद के साथ, 7 करोड़ सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र के साथ, 9 करोड़ द्वापर में राजा युधिष्ठर के साथ तथा कलयुग 12 करोड़ जीवों के उद्धार के लिये स्वयं विष्णु को गुरु जांभोजी को इस धरा धाम पर आना पड़ा। उन्होंने 29 नियमों की आचार संहिता देकर बिश्नोई पंथ की स्थापना की व जीवों ने जुगति व मुवां ने मुक्ति का सिद्धांत दिया। यह पंथ सभी मनुष्य-मात्र के लिए था तथा आज भी लोग बड़ी श्रद्धा से नियमों पर चलते हुए अपना जीवनयापन करते हैं।

- भगवान विष्णु और भक्त प्रह्लाद की कथा सुनाई

सिरसा। संत संदीप कथा प्रवचन करते हुए।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर खेम चंद बेनीवाल, कृष्ण बेनीवाल, ओपी बिश्नोई, राजकुमार बेनीवाल, भूप सिंह कसवां, जगतपाल कड़वासरा के अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्य, सेवक दल सदस्य व आसपास के गांवों से काफी संख्या में लोग मौजूद थे। सभा प्रचार सचिव डॉ. मनीराम सहारण ने मंच व्यवस्था को संभाला।

धूमधाम से मनाई जाएगी महाराजा अग्रसेन जयंती

सिरसा। पत्रकारों को जानकारी देते सभा के पदाधिकारी।

सिरसा। अग्रवाल सभा के जिला प्रधान संजय गोयल व महासचिव अश्वनी बांसल ने संयुक्त रूप से कहा कि आगामी 22 सितंबर को महाराजा अग्रसेन स्कूल में महाराजा अग्रसेन की जयंती धूमधाम व हर्षोल्लास से मनाई जाएगी। उन्होंने बताया कि इस बार महाराजा अग्रसेन जयंती पर शोभा यात्रा में अग्र समाज के बुजुर्ग स्तंभों को रथ पर बैठाया जाएगा। गौत्र वाइज 18 रथ तैयार किए जाएंगे। सभी रथ के साथ समाज के 50-50 अग्र बंधु रहेंगे। इसके साथ-साथ शहर के सभी 31 वार्डों में अग्रवाल समाज की कमेटी बनाई जाएगी। यह कमेटी हर अग्र बंधु की समस्या को सुनेगी और उसका निदान भी करवाने का काम करेगी। इस अवसर पर शिव जैन, प्रवीण महीपाल, प्रवीन साहूवाला, नवदीश गर्ग, महेश सिंगला, बंटी गर्ग भी मौजूद थे। सभा पदाधिकारियों ने बताया कि महिलाओं की भी इस बार ध्वजा शोभा यात्रा में अहम भूमिका रहेगी। शोभा यात्रा के दौरान भव्य झांकियां, रास नृत्य, अग्रोही शिव आकर्षण का केंद्र रहेंगी। वहीं सोनीपत बैंड डीजे, अग्रसैन महाराज व महालक्ष्मी रथ भी विशेष आकर्षण का केंद्र रहेंगे।

राजकीय कॉलेज भूना में हिंदी दिवस पर छात्र प्रतिभा की चमक

कविता से लेकर पोस्टर तक दिखी रचनात्मकता

विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भूना

राजकीय महाविद्यालय भूना में शनिवार को हिंदी दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। कवि मुंशी प्रेमचंद हिंदी विषय परिषद के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताएं करवाई गई, जिनमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढक़र हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र कुमार ज्यानी ने दीप प्रज्वलन कर किया।

भूना। हिंदी दिवस पर प्रतिभागी विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण करते शिक्षकगण। फोटो : हरिभूमि

काव्य-पाठ प्रतियोगिता में सानिया प्रथम

कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग की सहायक प्राध्यापक प्रो. पिंकी द्वारा किया गया। इस अवसर पर काव्य-पाठ, भाषण व पोस्टर मेकिंग जैसी रचनात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। काव्य-पाठ प्रतियोगिता में सानिया ने प्रथम, रोमा ने द्वितीय व दिपांशु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में वर्षा ने प्रथम, सुमित ने द्वितीय तथा संजय ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में सुमित ने पहला, दीक्षा ने दूसरा और रेणुबाला ने तीसरा स्थान हासिल किया। निर्णायक मंडल में बी.कॉम प्रथम वर्ष की सपना, बी.ए. प्रथम वर्ष की साहिबा और सरिता ने अपनी भूमिका निभाई। सभी प्रतिभागियों को निर्णायकों द्वारा निष्पक्ष रूप से मूल्यांकन कर पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी हमारी सांस्कृतिक विरासत की पहचान

कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. छोटू राम ने की। उन्होंने विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के महत्व से अवगत कराते हुए कहा कि हिंदी केवल हमारी मातृभाषा ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत की पहचान है। आज हिंदी वैश्विक मंचों पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवा रही है।

कविता स्पर्धा में सृजन, संवेदना का गूंजा स्वर

ओढां। ओढां स्थित माता हरकी देवी महिला महाविद्यालय में हिंदी दिवस पर कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन हिंदी विभाग की प्रवक्ता पूनम तंवर व मोनिका द्वारा करवाया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अभिलाषा शर्मा ने किया। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में एसोसिएट डायरेक्टर डॉ. शशिकांत शर्मा ने भाग लिया। निर्णायक मंडल में मोनिका व पंजाबी विभाग की प्रवक्ता अमनदीप ने अहम भूमिका निभाई। इस प्रतियोगिता में बीएससी फाइनल की छात्रा किरण ने प्रथम स्थान, ईशा ने द्वितीय स्थान तथा नीलम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के दौरान छात्राओं ने अपनी कविताओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ।

खबर संक्षेप

इग्नू ने 15 सितंबर तक होंगे दाखिले

फतेहाबाद। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने जुलाई 2025 सत्र के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों में ऑनलाइन और ओडीएल माध्यम से दाखिले की अंतिम तिथि को 31 अगस्त से बढ़ाकर अब 15 सितंबर कर दिया है। यह निर्णय उन छात्रों को ध्यान में रखते हुए लिया गया है जिन्हें मेरिट या अन्य कारणों के चलते पूर्व में दाखिला नहीं मिल सका था।

नवनियुक्त रजिस्ट्रार ने संभाला कार्यभार

सिरसा। सीडीएलयू के कुलपति प्रोफेसर विजय कुमार ने शनिवार को नवनियुक्त कुलसचिव डॉ. सुनील कुमार को विधिवत रूप से कार्यभार ग्रहण करवाया। इस मौके पर डॉ. सुनील कुमार के परिजनों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं गैर-शिक्षकों ने भागीदारी की। इसके अतिरिक्त गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय हिसार के कुलसचिव डॉ. विजय कुमार, सीडीएलयू के पूर्व कुलसचिव एवं सीआरएसयू, जींद के परीक्षा नियंत्रक परीक्षा डॉ. राजेश बंसल तथा डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रो. राजकुमार, पूर्व कुलसचिव प्रोफेसर अशोक शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

डिफेंस पीजी कॉलेज का परिणाम रहा शानदार

टोहाना। चौधरी देवी लाल राजकीय महाविद्यालय सिरसा द्वारा बी.ए. प्रथम वर्ष का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। इसमें भूना रोड स्थित डिफेन्स पीजी कॉलेज ऑफ एजुकेशन का परीक्षा परिणाम शानदार रहा। महाविद्यालय में प्रथम स्थान पुष्पा, द्वितीय स्थान नीरू तथा तृतीय स्थान अमनदीप कौर ने प्राप्त किया।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के लिए किया जागरूक

फतेहाबाद। महिला एवं बाल विकास विभाग, भूना की ओर से सीडीपीओ स्नेह लता की अध्यक्षता में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान सीडीपीओ स्नेह लता ने आंगनबाड़ी वर्कर्स व महिलाओं को विभागीय स्कीमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पोषण माह के दौरान प्रतिदिन एक्टिविटी वाइज मानने बारे भी जानकारी दी। महिलाओं को अपने बच्चों का कद व वजन हर माह करवाने तथा अपने बच्चों का खानपान पर विशेष ध्यान रखने बारे आह्वान किया गया।

साइबर सुरक्षा डिजिटल युग में गंभीर चुनौती

सिरसा। सीएमके नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय के मास कम्युनिकेशन विभाग ने साइबर सुरक्षा एवं साइबर हाइजीन विषय पर पोस्टर मेकिंग व पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों को इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग, साइबर अपराधों से बचाव तथा डिजिटल स्वच्छता के प्रति जागरूक करना था। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने आकर्षक पोस्टरों एवं प्रभावशाली प्रेजेंटेशनों के माध्यम से साइबर सुरक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं जैसे कि पासवर्ड की गोपनीयता व अन्य जानकारी दी।

करीब 200 एकड़ से अधिक धान की फसल खराब

रहनखेड़ी व लहरिया में जलभराव से आफत, बर्बादी के कगार पर किसान

खेतों में अब सिर्फ पानी ही पानी नजर आ रहा है और किसानों की आंखों में आंसू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भूना

पिछले दिनों 31 अगस्त से 5 सितंबर के बीच रहनखेड़ी और लहरिया गांव समेत आसपास के इलाकों में हुई मूसलाधार बारिश ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया। खेतों में इतना जलभराव हो गया है कि करीब 200 एकड़ से अधिक धान की फसल पूरी तरह से बर्बाद हो चुकी है। कई किसान ऐसे हैं, जिनकी पूरी जीविका इसी फसल पर टिकी थी। खेतों में अब सिर्फ पानी ही पानी नजर आ रहा है और किसानों की आंखों में आंसू।

भूना। रहनखेड़ी गांव के खेतों में जलभराव में डूबी हुई धान की फसल।

रणधीर सिंह की 15 एकड़ फसल खराब

रहनखेड़ी गांव के किसान रणधीर सिंह की 15 एकड़ में खड़ी धान की फसल पूरी तरह चौपट हो गई। रणधीर की किडनी फेल हो चुकी है और वह इलाज के लिए इस फसल पर निर्भर थे। उम्मीद थी कि इस बार अच्छी पैदावार होगी, फसल बिकेगी और इलाज संभव हो पाएगा, लेकिन अब खेतों में सिर्फ पानी है और दिल में एक अधूरा सपना।

कर्ज के बोझ तले दबा किसान, चिंता

रहनखेड़ी गांव के हरपाल सिंह की कहानी और भी दर्दनाक है। बीते साल बेटी की शादी, बेटे को विदेश भेजने की कोशिश में वह पहले ही कर्ज में डूब चुके थे। फर्जी एजेंटों ने लाखों रुपए हड़प लिए और अब हालात ये हैं कि करीब 50 लाख का कर्ज उनके सिर पर है। 20 एकड़ की फसल थी, जिसे बेचकर वह कर्ज उतारने की आस लगाए बैठे थे।

खाराखेड़ी, चिंदड़ व दैयड़ में जलभराव से बुरे हाल

बता दें कि पिछले दिनों जिला में आई भारी बरसात से भट्ठू में दो जगह हिसार मल्टीपर्पज ड्रेन टूटने से 2 हजार एकड़ से ज्यादा नरमा की फसल डूब गई। इसके अलावा यहां सेमग्रस्त इलाके के रामसरा, दैयड़, जांडवाला, खाबड़ा कलां, फतेहाबाद के गांव बड़ोपल, चिंदड़, खाराखेड़ी, कुम्हारिया, काजलहेड़ी इत्यादि गांवों में 12 दिन बाद भी 2-2 फुट पानी भरा हुआ है। पिछले दिनों यहां जिला प्रशासन के अधिकारी व पूर्व विधायक ने दौरा किया तो चिंदड़ के लोगों ने जमकर भड़ास निकाली। लोगों ने आरोप लगाया कि यहां सत्ताधारी लोग पानी निकासी के लिए डलने वाली पाइप लाइन के 7 करोड़ रुपये खा गए हैं। इसके बाद हरकत में आए प्रशासन ने वहां पाइप लाइन डलवाने का काम शुरू करवाया।

मां की दवाई तक नहीं जुटा पा रहे दिलबाग

दिलबाग सिंह की 15 एकड़ धान की फसल जलभराव के कारण पूरी तरह नष्ट हो गई। उनकी बुजुर्ग मां अधरंग से पीड़ित हैं और अच्छे अस्पताल में इलाज की जरूरत है। दिलबाग की आंखें भर आती हैं जब वो कहते हैं 'सारा सहारा इसी फसल पर था, अब मां का इलाज भी मुश्किल हो

किसानों की मांग : तुरंत मुआवजा दे सरकार

समाजसेवी एवं किसान बाबा बक्शीश सिंह, पूर्व सरपंच प्रतिनिधि केसर सिंह, किसान नेता कमल सिंह बराड़ व गुरविंदर सिंह तथा बलदेव सिंह गिल ने सरकार और प्रशासन से अपील की है कि जल्द से जल्द फसल के नुकसान का सर्वे कर मुआवजा दिया जाए, ताकि वह दोबारा खड़े हो सकें। सरकार किसानों को तुरंत मुआवजा दें।

चरखीदादरी को हराकर फतेहाबाद ने 158 रनों से जीता मैच

अंडर-16 क्रिकेट चैम्पियनशिप में प्रथम मुडाई बने पहले शतकवीर

फतेहाबाद। शतकवीर प्रथम मुडाई को बधाई देते एसोसिएशन पदाधिकारी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

हरियाणा क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा चलाई जा रही अंडर 16 क्रिकेट प्रतियोगिता के पहले ही मैच में नाबाद 119 रन बनाकर प्रथम मुडाई इस आयुवर्ग के पहले शतकवीर खिलाड़ी बन गए हैं। बता दें हरियाणा क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा चलाई जा रही अंडर 16 क्रिकेट प्रतियोगिता का पहला मैच चरखी दादरी के साथ लाहली, रोहतक स्थित चौधरी बंसीलाल स्टेडियम में खेला गया। इसमें चरखी दादरी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए फतेहाबाद की टीम ने निर्धारित 50 ओवर में आठ विकेट खोकर 256 रन बने, जिसमें प्रथम मुडाई ने नबाद 120 गेंदों में 119 रन बनाए व शौर्य ने 50 रन का योगदान दिया। लक्ष्य का पीछा करते चरखी दादरी की टीम 32 ओवर में 98 रन बनाकर ऑल आउट हो गई व फतेहाबाद ने यह मैच 158 रन से जीत लिया। फतेहाबाद की ओर से गर्वित भादु ने 5 विकेट व बलविंदर सिंह ने 3 विकेट हासिल किए।

प्रदर्शन को सराहा

फतेहाबाद क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव नरेश कुलडिया ने प्रथम मुडाई को एवरेस्ट क्रिकेट अकादमी की टोपी पहनाकर सम्मानित किया गया व उसे आगे आने वाले वाले मैचों में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया। एमएम कॉलेज में स्थित एवरेस्ट क्रिकेट अकादमी के कोच मनु शर्मा ने बताया कि प्रथम के उपलब्धि उसकी कड़ी मेहनत व निरंतर अभ्यास की वजह से है।

जीनत ने शतरंज में जीता गोल्ड मेडल

क्रेसण्ट स्कूल के खिलाड़ियों ने 58वीं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जमाया रंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

क्रेसण्ट स्कूल ने 58वीं राज्य स्तरीय स्कूल शतरंज प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। विभिन्न आयु वर्गों में विद्यालय के खिलाड़ियों ने जिला फतेहाबाद की ओर से नेतृत्व करते हुए स्वर्ण पदक एवं कांस्य पदक जीते। आयु वर्ग 14 में विद्यालय की प्रतिभाशाली खिलाड़ी जीनत ने गोल्ड मेडल जीतकर हरियाणा टीम में स्थान बनाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपना चयन सुनिश्चित किया। आयु वर्ग 17 में अभिलाषा एवं भूमिका ने अपने शानदार खेल प्रदर्शन से जिला फतेहाबाद को तृतीय स्थान प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

टीम इवेंट में क्रेसण्ट स्कूल ने अपने सभी पांच मुकाबले जीतकर राज्य स्तर पर स्वर्ण पदक अर्जित किया तथा राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हरियाणा राज्य का नेतृत्व करने का गौरव प्राप्त किया। आयु वर्ग 19 लडक्रों में विद्यालय के रजत ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए जिला फतेहाबाद को चौथे स्थान तक पहुंचाया एवं विहान कथूरिया ने आयु वर्ग 14 में उम्दा खेल दिखाकर टीम को चौथे स्थान पर पहुंचाया। आयु वर्ग 11 में विहान, रूहान एवं आयु वर्ग 11 की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में क्रेसण्ट पब्लिक स्कूल जिला फतेहाबाद का नेतृत्व करेगा।

फतेहाबाद। शतरंज खिलाड़ियों को बधाई देते प्रधानाचार्या रितु सिंधु।

सक्षम भी जीता

प्रधानाचार्या रितु सिंधु प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें आगामी स्तर पर इसी तरह उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। पिछले वर्ष भी क्रेसण्ट स्कूल के 11 खिलाड़ियों ने विभिन्न आयु वर्गों में राज्य स्तरीय स्कूली खेलों में पदक जीतकर विद्यालय एवं जिले का नाम गौरवान्वित किया।सक्षम ने शतरंज प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर राज्य स्तर पर फतेहाबाद टीम में स्थान सुनिश्चित किया।

डेरा जगमालवाली के महाराज बीरेंद्र सिंह एक पखवाड़े से बाढ़ पीड़ितों की मदद में जुटे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कालांवाली

गांव-गांव जाकर पहुंचा रहे राहत सामग्री व बच्चों की किताबें

पंजाब के फाजिल्का में बाढ़ की विभीषिका से जूझ रहे परिवारों के बीच डेरा जगमालवाली के महाराज बीरेंद्र सिंह पिछले 15 दिनों से लगातार सेवा कार्यों में सक्रिय हैं। महाराज स्वयं प्रभावित गांवों में पहुंचकर लोगों से मिल रहे हैं और हर परिवार को यह भरोसा दिला रहे हैं कि इस मुश्किल घड़ी में वे अकेले नहीं हैं। महाराज बीरेंद्र सिंह ने सलिमसाह, कुरक, नूर समंद, मौजम और राणा गाँवों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने बच्चों को स्कूल बैग, किताबें, ड्रेस और पढ़ाई के लिए जरूरी सामग्री वितरित की। बच्चों की आंखों में नई चमक और चेहरे पर मुस्कान लौट आई। डेरा जगमालवाली के सेवादार भी दिन-रात लोगों की सेवा में जुटे हैं। टीमें बनाकर वे हर घर जा रही हैं और जरूरत के अनुसार राशन, कपड़े, दवाइयां और अन्य सामग्री पहुँचा रही हैं। राहत सामग्री पाकर प्रभावित परिवारों की आंखों से आंसू छलक पड़े, लेकिन इस बार दर्द के नहीं बल्कि उम्मीद और राहत के आंसू थे। ग्रामीणों ने बताया कि जब संत ने खुद उनके घर आकर दिलासा दिया तो ऐसा लगा मानो परिवार का ही कोई सदस्य उन्हें संभालने आया हो।

सिरसा। पंजाब के फाजिल्का क्षेत्र में बाढ़ पीड़ितों से मिलते महाराज बिरेंद्र सिंह।

विश्व प्राथमिक सहायता दिवस पर जिला रेडक्रॉस सोसायटी ने चलाया जागरूकता

फतेहाबाद। विश्व प्राथमिक सहायता दिवस पर उपस्थित युवाओं को प्राथमिक सहायता का प्रशिक्षण देते रेडक्रॉस के वॉलिंटियर।

फतेहाबाद। विश्व प्राथमिक सहायता दिवस के अवसर पर जिला रेडक्रॉस सोसायटी कार्यालय व राजकीय माध्यमिक विद्यालय, बस्ती बलाडिया में जिला प्रशिक्षण अधिकारी दलबीर सिंह के नेतृत्व में प्राथमिक सहायता प्रशिक्षण, सीपीआर, पेंटिंग प्रतियोगिता व पौधारोपण बारे जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव रामजी लाल ने बताया कि प्राथमिक सहायता हर किसी के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह किसी भी दुर्घटना या आकस्मिक स्वास्थ्य समस्या में समय पर सही कदम उठाने में मदद करती है। इसके साथ ही घायल का जीवन बचाने में इसका बड़ा योगदान होता है। उन्होंने बताया कि विश्व प्राथमिक सहायता दिवस को प्रत्येक वर्ष सितंबर माह के दूसरे शनिवार को मनाया जाता है ताकि लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा, आपातकालीन प्रतिक्रिया और प्राथमिक चिकित्सा के प्रति जागरूक किया जा सके। उन्होंने कहा कि समाज के प्रत्येक वर्ग को इस प्रकार की जानकारी होनी चाहिए ताकि वे किसी भी आपात स्थिति में समय रहते मदद कर सकें। इस अवसर पर जिला रेडक्रॉस सोसायटी उप अधीक्षक सुरेन्द्र चुघ, सुनील भाटिया, रामप्रताप, कृष्ण कुक्कड़, वंदना शर्मा, राज

जिले में सेवा पखवाड़ा कार्यक्रमों के लिए संयोजक व सहसंयोजक नियुक्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने 17 सितम्बर से शुरू होने जा रहे सेवा पखवाड़ा के तहत विभिन्न कार्यक्रमों को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए संयोजक व सहसंयोजकों की नियुक्तियां की है। रक्तदान शिविर के लिए कंवल चौधरी को संयोजक व सरपंच गुरतेज सिंह व जीवन बंसल को सहसंयोजक नियुक्त किया है। स्वच्छता अभियान को लेकर सविता टुटेजा को संयोजक व नरेश बंसल व जोगिन्द्र नंदा को सहसंयोजक नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार चिकित्सा शिविर के लिए डॉ. सुमन बजाज को संयोजक, सुखविन्द्र सरपंच व डॉ. अजय गुप्ता को सहसंयोजक नियुक्त किया गया है। प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन के लिए सुभाष खिचड़ को संयोजक संजय रेवड़ी व एडवोकेट सतपाल सेठी को सहसंयोजक, स्कूल पेंटिंग प्रतियोगिता के लिए बलदेव सैनी को संयोजक बनाया गया।

फतेहाबाद। एससी मोर्चा की बैठक को संबोधित बीजेपी जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बैठक

इसके अलावा सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बीजेपी जिला कार्यालय में एससी मोर्चा की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता भाजपा एससी मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष विकास ललौदा ने की। बैठक में विशेष रूप से भाजपा के जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा व भाजपा एससी मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश बोस्ती ने शिरकत की। उन्होंने एससी मोर्चा के सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की ड्यूटियां निर्धारित की।

1962 नंबर पर कॉल पर सुविधा

मोबाइल वेटरनरी सेवा पशुधन की सुरक्षा में अहम : डॉ. संदीप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

- जिले में 1962 मोबाइल वेटरनरी यूनिट सेवा पशुपालकों को लिए उपलब्ध करवा रही सुविधा

जिला के गांव कुताबढ़ में शनिवार को पशुपालन जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर जीवीएच रानियां डॉ. संदीप ने ग्रामीणों को बताया कि अब पशुपालक 1962 नंबर पर कॉल करके अपने पशुओं का इलाज अपने ही घर पर करा सकते हैं। उन्होंने टीकाकरण, पोषण और मौसमी रोगों से बचाव के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जिले में 1962 मोबाइल वेटरनरी यूनिट सेवा पशुपालकों के लिए समय पर मिलने वाली राहत और भरोसे का प्रतीक बन चुकी है। फरवरी 2024 से शुरू हुई इस सेवा ने अब तक जिले में लगभग 20581 पशुओं का इलाज कर ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। यह सेवा हरियाणा सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसे धानुष हेल्थकेयर सिस्ट स प्रा. लि. द्वारा पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल के तहत संचालित किया जा रहा है, जिसमें एचएलडीबी का तकनीकी सहयोग प्राप्त है। ग्रामीणों ने बताया कि पहले हमें पशुओं का इलाज कराने के लिए दूर-दराज जाना पड़ता था, लेकिन अब केवल एक कॉल करने पर एंबुलेंस गांव तक पहुंच जाती है।

प्रथम व तृतीय स्थान प्राप्त किया

खंड स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में छाया राजकीय स्कूल बप्पां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बप्पां ने खंड स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में शानदार प्रदर्शन करते हुए अनेक प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं तृतीय स्थान प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। विद्यालय ने सोलो डांस जूनियर वर्ग में हनी ने प्रथम स्थान तथा सीनियर वर्ग में वर्षा ने प्रथम स्थान, स्किट जूनियर में तृतीय स्थान तथा सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान, ग्रुप डांस जूनियर में प्रथम स्थान और रागिनी प्रतियोगिता में तृतीय स्थान हासिल किए। विशेष रूप से सीनियर वर्ग के स्किट प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्राए जैसमीन, जसमीत कौर, मोहिनी, नूर, समृति, शालू रानी और सिदक ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। इन छात्राओं को प्रतियोगिता के लिए तैयार करने में अध्यापक नरेश कुमार ग्रोवर, दलजीत सिंह और सुरेंद्र शास्त्री का विशेष योगदान रहा। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर प्राचार्य शुभकरण शर्मा ने कहा कि यह उपलब्धि बच्चों की मेहनत, अध्यापकों के परिश्रम और पूरे विद्यालय परिवार के सहयोग का परिणाम है। उन्होंने सभी विजेता विद्यार्थियों को, उनके अभिभावकों को तथा विद्यालय के पूरे स्टाफ को हार्दिक बधाई दी और आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी विद्यालय ऐसे ही शानदार उपलब्धियां प्राप्त करता रहेगा। इसी अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी ने भी विद्यालय की सफलता पर बधाई संदेश प्रेषित करते हुए सराहा।

पानी उतरने के बाद स्वास्थ्य विभाग ने संभाला मोर्चा

डेंगू-मलेरिया को लेकर घर-घर कर जांच कर रही टीमें

विभाग की सात टीमों ने पिछले दस दिनों से लगातार जलभराव प्रभावित क्षेत्रों में सक्रिय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भूना

भूना शहर में हाल ही में हुए भारी बारिश और जलभराव के बाद अब स्वास्थ्य विभाग ने मोर्चा संभाल लिया है। विभाग की सात टीमों ने पिछले दस दिनों से लगातार जलभराव प्रभावित क्षेत्रों में डेरा डाल रखा है। ये टीमें घर-घर जाकर लोगों के स्वास्थ्य की जांच कर रही हैं, साथ ही उन्हें साफ-सफाई और स्वच्छ पेयजल के महत्व के बारे में जागरूक भी कर रही हैं।

भूना। स्वास्थ्य विभाग की टीम जलभराव प्रभावित क्षेत्र के लोगों की स्वास्थ्य जांच करते हुए।

एसएमओ डॉ. सनी मल्होत्रा ने बताया कि विभाग की ओर से अब तक 5 हजार से अधिक क्लोरीन गोलियां वितरित की जा चुकी हैं, ताकि लोग सुरक्षित पानी पी सकें। इसके अलावा डेंगू के लारवे को खत्म करने के लिए जलभराव वाले इलाकों में दवाइयों का छिडक़ाव किया जा रहा है।

जगह-जगह लाल दवा का छिडक़ाव कर मच्छर प्रजनन रोकने की कोशिश की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग की टीम न केवल दवाइयां बांट रही है, बल्कि लोगों की प्राथमिक जांच कर उन्हें जरूरत अनुसार दवाइयां भी दे रही है। बड़ी संख्या में ओआरएस, पेरासिटामोल, एंटीबायोटिक और एंटीसेप्टिक दवाइयों का वितरण किया गया है। विभाग की एक इमरजेंसी टीम भी लगातार प्रभावित वार्डों और गांवों पर नजर बनाए हुए है, ताकि किसी भी तरह की गंभीर स्थिति में तुरंत कार्रवाई की जा सके। डॉ. मल्होत्रा ने बताया कि टीमों द्वारा रोगियों के खून के सैंपल लेकर स्लाइड बनाई जा रही है, जिससे मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया जैसी बीमारियों की समय रहते पहचान की जा सके। उन्होंने कहा कि जलभराव वाले क्षेत्रों में संक्रमण और त्वचा रोग फैलने की संभावना अधिक होती है, इसलिए विभाग की टीमें सतर्कता से काम कर रही हैं। एसएमओ ने नगरवासियों से अपील की गई है कि वे साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें, पानी को उबालकर पिएं और किसी भी लक्षण के दिखने पर तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र से संपर्क करें।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 14 सितंबर 2025

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा हिंदी की जड़ें प्राचीन भारतीय आर्य भाषा परिवार की है, जिसकी जननी संस्कृत है। संस्कृत, जिसे 'देववाणी' भी कहा जाता है। इसकी विशिष्टताओं ने हिंदी को आज विश्व के कोने-कोने तक पहुंच दिया है। अगर इसके प्रसार के लिए कुछ और प्रयास किए जाएं तो निस्संदेह इसका वर्चस्व और भी बढ़ेगा।

हिंदी दिवस विशेष

भारत की आत्मा है हिंदी

{ आवरण कथा / भूपेंद्र शर्मा }

आज हिंदी भाषा भारत तक सीमित नहीं है। यह विश्व भर में एक सशक्त पहचान बना चुकी है। दुनिया के कई देशों में लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है। भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में, हिंदी सीखने से भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से के साथ संवाद एवं जुड़ने का अवसर मिलता है। भारत की विविध संस्कृति, जीवंत अर्थव्यवस्था तथा समृद्ध विरासत हिंदी को यात्रा, कार्य एवं सांस्कृतिक खोज के लिए एक श्रेष्ठ माध्यम बनाती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ रही है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां, विशेष रूप से जिनके भारत में निर्माण, उत्पादन कार्य या ग्राहक हैं, उन कर्मचारियों को महत्व देती है, जो हिंदी में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं। हिंदी सीखना करियर की संभावनाओं को बढ़ा सकता है, खासकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार, पर्यटन, पत्रकारिता, अनुवाद एवं कूटनीतिक सेवाओं जैसे क्षेत्रों में।

क्षेत्रीय भाषाओं का प्रवेश द्वार

हिंदी का विकास कई चरणों में हुआ। अपभ्रंश से होते हुए, इसने अपनी वर्तमान पहचान बनाई। मध्यकाल में खड़ी बोली के रूप में इसने अपनी नींव रखी, जो आगे चलकर आधुनिक हिंदी का आधार बनी। हिंदी भारत में बोली जाने वाली विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को समझने एवं सीखने के लिए एक प्रवेश द्वार की तरह है। बंगाली, मराठी, गुजराती एवं पंजाबी सहित कई भारतीय भाषाएं व्याकरण, शब्दावली तथा लिपि के मामले में हिंदी के साथ समानताएं साझा करती हैं।

फिल्म उद्योग तक पहुंच

भारतीय फिल्म उद्योग में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में फिल्मों का निर्माण होता है, जिन्हें भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में देखा जाता है। हिंदी सिनेमा की विश्व में अद्भुत लोकप्रियता है। विदेशों में हिंदी के प्रसार में हिंदी फिल्मों का बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्में, हिंदी गीत एवं टीवी शो की जीवंत दुनिया हिंदी सीखने वालों के लिए बड़ा सरल माध्यम है। वहीं इनके माध्यम से विश्वभर में फैले भारतीय प्रवासियों के साथ भारत एवं भारतीय संस्कृति के अटूट, मधुर संबंध स्थापित होते हैं। इसीलिए हिंदी को भारत की आत्मा कहते हैं।

विश्व में 61 करोड़ हिंदी भाषी

वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के अनुसार, हिंदी भाषा वर्तमान समय में 61 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थित है। यह सचिवालय हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है।

राजभाषा विभाग के प्रयास

सन 2019 से सभी 59 मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया। अब तक कुल 528 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन भी किया जा चुका है। विदेशों में भी लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई एवं पोर्ट-लुई में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने की भी पहल की है। पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन बनारस में 13-14 नवंबर, 2021 को तथा 14 सितंबर 2022 को सूरत में दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस साल पुणे में तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। विभाग ने कुल 90 हजार शब्द का एक 'ई-महाशब्दकोष' मोबाइल एप तथा लगभग 9 हजार वाक्य का 'ई-सरल' वाक्यकोष भी तैयार किया है।

हिंदी की विशिष्टताएं

देवनागरी लिपि: हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो देखने में मनमोहक और ध्वन्यात्मक रूप से सटीक है। इसमें 11 स्वर एवं 33 व्यंजन हैं, जिनमें प्रत्येक ध्वनि का अलग स्वर एवं उच्चारण है।

स्वर की लंबाई: हिंदी में कुछ स्वर ध्वनियों का उच्चारण विस्तारित अवधि के साथ किया जा सकता है, जिससे शब्दों का अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए, 'मा' का अर्थ 'मां' है, जबकि 'मान' का अर्थ 'सम्मान' है।

मानद रूप: हिंदी व्यक्तियों को सम्मानपूर्वक संबोधित करने के लिए मानद रूपों को शामिल करती है। बड़ों, सम्मानित व्यक्तियों या उच्च सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों से बात करते समय सम्मानजनक सर्वनामों, क्रिया रूपों एवं वाक्य संरचनाओं का उपयोग भाषा के सांस्कृतिक प्रभाव को सम्मान एवं शिष्टाचार के साथ प्रदर्शित करता है।

लिंग वाली संज्ञा: हिंदी में संज्ञाओं के तीन लिंग हैं। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग। एक संज्ञा का लिंग अकसर विशेषणों, क्रियाओं तथा सर्वनामों के समझौते को निर्धारित करता है, जो इसके साथ उपयोग किए जाते हैं।

सर्वनाम का अंतर: हिंदी एकवचन के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक सर्वनामों के बीच अंतर करती है। औपचारिक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग सम्मान दिखाने या उच्च पदस्थ व्यक्ति को संबोधित करने के लिए किया जाता है, जबकि अनौपचारिक सर्वनाम 'तुम' का प्रयोग समान सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों के साथ किया जाता है।

जटिल क्रिया प्रणाली: हिंदी की क्रिया प्रणाली में विभिन्न क्रिया रूप एवं काल हैं। क्रियाओं का संयोजन तनाव, पहलू, मनोदशा एवं विषय के साथ समझौते जैसे कारकों से प्रभावित होता है, जिससे भाषा की क्रिया संरचना जटिल तथा अभिव्यंजक हो जाती है।

संस्कृत का प्रभाव: हिंदी पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है। कई हिंदी शब्दों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, जो शब्दावली को समृद्ध करती है तथा भारत की प्राचीन सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परंपराओं के साथ गहरा संबंध प्रदान करती है।

ध्वनि विविधता: हिंदी में ध्वनियों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जिसमें स्वर, व्यंजन एवं नासिक्य ध्वनियां हैं। इसकी ध्वन्यात्मक सूची विविध मधुर उच्चारण प्रवाहित करती है।

क्षेत्रीय विविधता: भारत के विभिन्न हिस्सों में हिंदी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियां तथा शैली है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शब्दावली, उच्चारण एवं व्याकरणिक विविधताएं हैं, जो हिंदी भाषी जनमन के भीतर भाषाई विविधता को दर्शाती हैं।

अभी अधूरा है विकास

हिंदी अपनी वैश्विक पहचान रखती है, किंतु इसके विकास के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

तकनीकी विकास: हिंदी में तकनीकी शब्दावली को अधिक विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में इसका उपयोग बढ़ सके।

मानकीकरण एवं सरलता: बोल-चाल एवं लेखन में एकरूपता लाने के लिए मानकीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सरकारी प्रोत्साहन: सरकार को हिंदी के उपयोग को सभी क्षेत्रों में बढ़ावा देना चाहिए, विशेषकर शिक्षा एवं प्रशासनिक कार्यों में।

वैश्विक मंचों पर उपयोग: अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के प्रयास होने चाहिए। *

हिंदी दिवस और संविधान में स्थान

हिंदी दिवस मनाने का इतिहास भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा है। 14 सितंबर 1949 को, भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया। यह निर्णय हिंदी को राष्ट्र की एकता के सूत्र के रूप में स्थापित करने के लिए लिया गया था। पहला हिंदी दिवस 1953 में मनाया गया। यह दिन हमें भाषा के महत्व और उसके संरक्षण की याद दिलाता है। भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी उपबंध हैं। अनुच्छेद 120 (संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा) भाग 17 में अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। अनुच्छेद 343 (संघ की राजभाषा) संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

{ विचारणीय / लोकमित्र गौतम }

हिंदी को लेकर सहज नहीं युवा पीढ़ी

इसे विडंबना ही कहना चाहिए कि जिस हिंदी को बोलने, जिसमें मनोरंजन करने में युवा पीढ़ी खूब आनंद लेती है, उसे ही लिखने और पढ़ने में असहज रहती है। हालांकि इसके लिए सिर्फ वही नहीं जिम्मेदार है। ऐसे में इस समस्या के निराकरण के लिए परिवार, समाज से लेकर व्यवस्था तंत्र को भी विचार करना होगा।

भारत की कुल आबादी में से 65 फीसदी से ज्यादा युवा हैं, जिनकी उम्र 35 साल या इससे कम है। इनमें से 60 से 65 फीसदी युवा फर्राटे से हिंदी बोलते-समझते हैं। ये आमतौर पर हिंदी फिल्में भी देखते हैं और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी के कार्यक्रम चाव से देखते हैं। मगर इनकी एक ऐसी कमजोरी है, जिस पर आम लोगों का यकायक ध्यान नहीं जाता। इनमें से करीब आधे युवा ऐसे हैं, जो हिंदी बोलते हैं, समझते हैं, लेकिन प्रवीणता से हिंदी पढ़ और लिख नहीं पाते। कुछ पढ़ते भी हैं तो सहजता से शुद्ध-शुद्ध नहीं पढ़ पाते।

आधी युवा आबादी है असहज: देश में हिंदी बोलने वाले करीब आधे युवा हिंदी में कतई सहज नहीं है। ऊपर से देखने में यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं लगती। यहां तक कि हिंदी भाषी मां-बाप को भी अपने हिंदी लिख और पढ़ न पाने में असहज बच्चों से किसी तरह की भावनात्मक परेशानी नहीं होती, लेकिन सच बात यह है कि हिंदी की सबसे कमजोर कड़ी यही युवा पीढ़ी है, जो ऊपर से तो हिंदी में बहुत सहज दिखती है, मगर भीतर से हिंदी को लेकर बिल्कुल असहज है। दरअसल, यही वह पीढ़ी है, जो अप्रत्यक्ष रूप में हिंदी को मौखिक भाषा तक सीमित करने में लगी है।

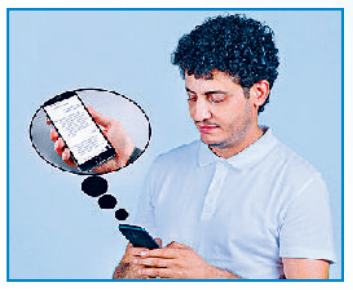

शैक्षिक-सांस्कृतिक विडंबना: यह सचमुच हिंदी के साथ बड़ी भाषाई विडंबना है, क्योंकि हिंदी बोलने वाले, हिंदी पढ़ने वाले, हिंदी में मनोरंजन करने वाले युवा बाहरी तौर पर यह प्रभाव देते हैं कि जैसे वो हिंदी सेवी हों। पर वास्तव में वो हिंदी सेवी नहीं होते। दक्षिण भारत में खासकर बेंगलुरु, चेन्नई में जिन उत्तर भारतीय युवाओं की पहचान हिंदीभाषी होने से है, वास्तव में ये हिंदीभाषी समझे जाने वाली युवा पीढ़ी का बड़ा हिस्सा भी उन्हीं की तरह हिंदी में असहज है। भले यह बाहरी तौर पर हिंदी वाले लगते हों, पर सचमुच में ये हिंदी वाले नहीं हैं, हिंदी को इनसे फायदा कम, नुकसान ज्यादा होता है, क्योंकि हिंदी बोलना, हिंदी में बातें करना, हिंदी में मनोरंजन करना, लेकिन हिंदी लिख और पढ़ न पाना या इसमें सहज न हो पाना, सिर्फ भाषाई समस्या नहीं है। यह सांस्कृतिक और शैक्षिक त्रासदी भी है।

नहीं है हिंदी की गहरी समझ: दक्षिण या पश्चिम भारत के बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के भी बड़े शहरों में ऐसे युवाओं की भरमार है। दिल्ली में भी 25 से 30 फीसदी ऐसे युवा हैं, जो बस हिंदी में बातें करते हैं, गाने सुनते हैं, वेब सीरीज देखते हैं, लेकिन सौ शब्दों का आवेदनपत्र हिंदी में नहीं लिख सकते। घंटों हिंदी में बहस करने वाले उस विषय पर एक पेज भी हिंदी में नहीं लिख पाते। यह इसलिए बड़ी समस्या है कि इससे हिंदी की असली समस्या पर पर्दा पड़ा रहता है। यह भ्रम बना रहता है कि हिंदी, बोलने, जानने और समझने वाले बहुत बड़ी तादाद में लोग हैं। लेकिन यह ऐसी ढोल के भीतर पोल वाली खोखली पीढ़ी है, जो न तो हिंदी का साहित्य जानती है, न कविता जानती है, न हिंदी के अखबार पढ़ती है और न ही हिंदी के ऐतिहासिक दस्तावेजों से ही इसका कोई परिचय है। ऐसे में भला यह पीढ़ी हिंदी का कैसे भला करेगी? यह तो उल्टा हिंदी में रह कर ही हिंदी को कमजोर करती है।

पहचान होती है मातृभाषा: अगर आप ऐसी पृष्ठभूमि से आते हैं कि आपके घर की भाषा यानी मातृभाषा हिंदी है और पढ़ाई और कामकाज की भाषा अंग्रेजी है, तो भले रोज के कामकाजी घंटों में आपको यह खुशफहमी रहती हो कि अपनी कमजोर हिंदी को लेकर आपमें किसी तरह की असहजता नहीं है, लेकिन वास्तविकता यह होती है कि अगर हम अपनी मातृभाषा को पढ़ने और लिखने में सहज नहीं होते तो हमारे अंदर एक स्वतः जन्मी हीन भावना हर समय रहती है। जो लोग अपनी मातृभाषा को सही से लिखना, पढ़ना नहीं जानते, उन्हें अपनी दुनिया के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों का भी पता नहीं होता। दिन रात अंग्रेजी पढ़ने वाले ज्यादातर भारतीय अंग्रेजी के मुहावरों, उसकी लोकोक्तियों में मौजूद गहरे सांस्कृतिक संदर्भों से कभी नहीं जुड़ पाते, इसलिए बहुत सी बातों को वो कभी भी गहराई से समझ नहीं पाते। हमें लिपि की कठिनाई का बहाना बनाकर अपनी भाषा से नहीं कटना चाहिए। एक बार अगर हम अपनी भाषा से कट गए, तो हम अपनी स्मृतियों से, पीढ़ीगत धरोहरों से और साहित्यिक विरासत से भी कट जाते हैं।

डिजिटल जीवनशैली का प्रभाव: इसमें आज की डिजिटल लाइफस्टाइल और बाहर के देशों से आने वाली तकनीकी का भी हाथ है। लेकिन इस आरोप से तो हम अपनी भाषा के साथ लगाव न रख पाने को सही नहीं ठहराते। माना कि डिजिटल युग में मोबाइल और सोशल मीडिया में रोमन लिपि में लिखे, पढ़े जाने का चलन है, जिससे देवनागरी की प्रैक्टिस खत्म होती है। लेकिन यह यूं ही स्वतः नहीं पैदा हो गया। इस स्थिति के पैदा होने में बकायदा सांस्कृतिक संदर्भों का योगदान है। आज जिस तकनीक का आप अपने जीवन में इस्तेमाल कर रहे हैं, वह किसी हिंदी भाषी ने नहीं विकसित की, वह इस तकनीक को हिंदी के अनुकूल क्यों विकसित करता? अतः हिंदी के साथ अपने सहज और आत्मीय रिश्ते आपको खुद ही रखने है, इसके लिए किसी तकनीकी कमी या उसके संकट को बहाना नहीं बना सकते। *

{ व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय }

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं।

हिंदी हमारी मदर टंग है

मुझे हिंदी दिवस के एक कार्यक्रम में जाना पड़ा। मैं जैसे ही माइक के सामने हुआ खड़ा, आयोजक ने कहा, 'आज आपको हिंदी पर एक कविता जरूर सुनानी है।'

मैंने कहा, 'तो सुनिए, जो हिंदी की कहानी है। हिंदी समस्त भारतीय भाषाओं की रानी है। हिंदी का बड़ा सम्मान है। यह हमारी आन-बान-शान है। इस पर हमें गर्व है, दर्प है, अभिमान है। क्योंकि हिंदी महान है।

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं। वर्ष भर पूजाघरों में मूर्तिवत सजाकर-संवार कर धरते हैं। इस भाषा में नहीं है कोई खोट। इसे साल के बाकी दिनों में तलाशो तो हिंदी वैसे ही मिला करती है, जैसे किसी माफिया के पूजाघर में रखे हुए नंबर दो के करेंसी नोट।

हिंदी हमारी अभिलाषा है। यह हमारी राजभाषा है। इसलिए इसकी पूजा करना हमारी मजबूरी है। जैसे आज की सियासत में अशालीन होना जरूरी है।

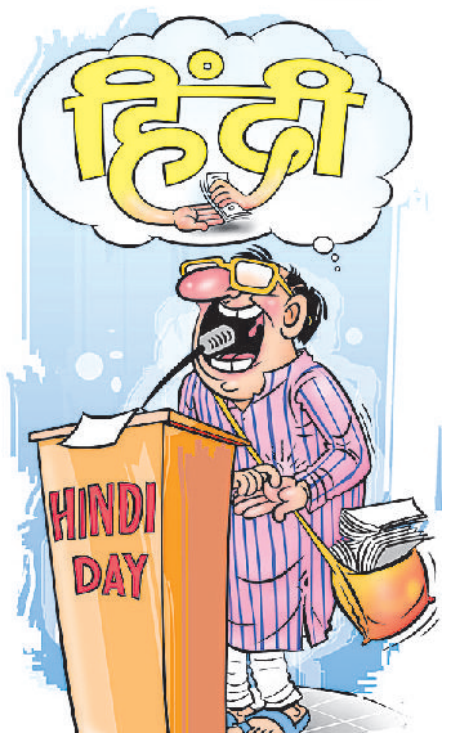

हिंदी का बड़ा महत्व है। हिंदी से हमें ममत्व है। हिंदी हमारे लिए वैसे ही है, जैसे गांव वालों के लिए मेला, जैसे मजदूरों के लिए ठेला और रैली में रेला। हिंदी हमारी शोभा है, हमारा अलंकार है। हिंदी हमारा अंतिम प्यार है। हिंदी का नाम लेते ही हमारे अधरों पर फूल खिलते हैं। हिंदी हमारे लिए इसलिए भी प्यारी है

क्योंकि हिंदी में मांगों तो वोट भी आसानी से मिलते हैं। इसीलिए तो हर राजनेता हिंदी के साथ दिखता है। अहिंदी भाषी सियासातदान भी हिंदी सीखता है।

हिंदी पर अब और कितना सुनाऊं मेरे भाई? हिंदी हमारे भाल की बिंदी है, और लोग हैं कि इतनी-सी बात समझ पाते नहीं कि मर्द बिंदी लगाते नहीं। तो आधी आबादी को छूट, बच गई आधी तो उसको भी है आजादी कि फैशन से फुर्सत हो तो बिंदी लगाएं। इस विदेशी कल्चर की क्यारी में हम कैसे हिंदी का प्लांट लगाएं? कहिए, आयोजक जी, अभी भी आपका मन नहीं भरा हो तो हम हिंदी पर और भी सुनाएं।'

आयोजक बोला, 'अब आप कृपापूर्वक जाएं और नेक्स्ट ईयर अगेन हिंदी पर ऐसी ही एक नई कविता लिखकर अवश्य लाएं।' *

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ–

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

एक डिस्क लेवल के ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?
स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC®

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन– सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली
देहली हॉस्पीटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय : दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466 | www.nonsurgicalspinecentre.in

{ लघुकथा / शीला श्रीवास्तव }

हिंदी बनाम इंग्लिश

रिया बहुत देर से अपने कमरे में चहलकदमी कर रही थी। नमिता ने पूछा, 'क्या बात है बेटी, क्यों परेशान हो?'

'मेरे स्कूल में पैरेंट्स मीटिंग है, और पापा घर पर नहीं हैं।' रिया खीझे स्वर में अपनी मम्मी से बोली।

'अरे तो क्या हुआ? मैं हूं ना। मैं चलती हूं पैरेंट्स मीटिंग में।' मां बोलीं।

'आप तो रहने ही दें। आपको इंग्लिश बोलना कहां आती है? आप आएंगी तो मेरा स्कूल में मजाक ही बनेगा।' रिया का जवाब सुनकर मां स्तब्ध रह गई। इस बात के लिए वह अकसर अपने पति से भी खरी-खोटी सुनती थी, आज बेटी ने भी सुना दिया। कुछ दिनों बाद स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर एक प्रतियोगिता का आयोजन होने वाला था, जिसका शीर्षक था, 'हिंदी बनाम इंग्लिश।' रिया जानती थी, मम्मी की हिंदी पर बहुत अच्छी पकड़ है। उसने पहले मम्मी से अपने पिछले बर्ताव के लिए मांफी मांगी फिर बोली, 'मम्मी, प्लीज आप मेरे लिए एक स्पीच लिख कर दे दीजिए।' मां पूरे मनोयोग से स्पीच लिखने में जुट गई। उसकी मेहनत रंग लाई। रिया को प्रथम पुरस्कार मिला। स्कूल से आते ही रिया अपनी मम्मी के गले लग गई, बोली, 'आपके लिखे स्पीच ने आज मुझे स्कूल में फेमस कर दिया। यूं आर ग्रेट मम्मी! यह पुरस्कार मैं आपको समर्पित करती हूं।'

अपनी बेटी की नजरों में अपने लिए सम्मान देख मां की आंखें खुशी से छलक आईं। *

स्पेशलः इंजीनियर्स डे, 15 सितंबर

पिछली सदी में हुए भारत के महान सिविल इंजीनियर एम. विश्वेश्वरैया की जयंती को इंजीनियर्स डे के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर हम आपको बता रहे हैं देश के अलग-अलग इलाकों में स्थित कुछ ऐसे निर्माणों के बारे में, जो इंजीनियरिंग की शानदार मिसाल पेश करते हैं। इनकी विशेषताओं के बारे में जानकर आप अचरज किए बिना नहीं रह पाएंगे।

देश में कई जगह मौजूद हैं इंजीनियरिंग के गौरवशाली प्रतीक

चिनाब पुल जम्मू-कश्मीर के रियासी में

बांद्रा-वर्ली सी लिंक मुंबई में

बेमिसाल

शिखर चंद जैन

अपने देश के अलग-अलग क्षेत्रों में निर्मित किए गए इंजीनियरिंग के ये नायाब नमूने हर किसी को हैरान कर देते हैं। ये गौरवशाली प्रतीक भारतीय इंजीनियरिंग की नई प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चिनाब रेलवे ब्रिज

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित यह विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। यह 359 मीटर ऊंचा है। अनूठा चिनाब ब्रिज पेरिस के एफिल टॉवर से भी 35 मीटर ऊंचा है। इसका निर्माण कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन और इंजीनियरिंग संस्थान आईआईएससी बेंगलुरु द्वारा किया गया है। आईआईटी दिल्ली और आईआईटी रुड़की ने इसकी भूकंप सहनशीलता का विश्लेषण किया, जबकि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इसके विस्फोट-प्रतिरोधी होने की पुष्टि की।

यह 8 तीव्रता तक के भूकंप के झटके, 40 टन टीएनटी तक का विस्फोट, -20 डिग्री सेल्सियस तक तापमान और 266 किमी. प्रति घंटा की गति वाली आंधी को सहन करने की क्षमता रखता है। दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल माना जाने वाला चिनाब पुल, जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले में बक्कल और कौरी के बीच स्थित है। यह उधमपुर, श्रीनगर, बारामुला रेलवे लिंक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जम्मू और कश्मीर को शेष भारत से जोड़ना है। इसके कारण क्षेत्र में कनेक्टिविटी काफी सुविधाजनक हो गई है।

स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी

हैदराबाद (तेलंगाना) में स्थित यह विशाल प्रतिमा 11वीं शताब्दी के वैष्णव संत श्री रामानुजाचार्य की है। 5 फरवरी 2019 को, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद

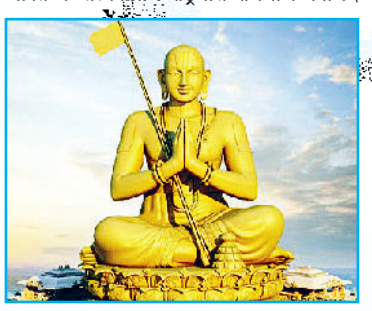

ने इस प्रतिमा का अनावरण किया। यह प्रतिमा समानता, न्याय और करुणा के उस दृष्टिकोण का प्रतीक है, जिसका उपदेश श्री रामानुजाचार्य ने मानवता को दिया था। स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी की ऊंचाई 216 फीट है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी प्रतिमा है। यह मूर्ति एक विशेष कांस्य मिश्र धातु से बनी है, जिसे पंच धातु कहा जाता है। इसमें श्री रामानुजाचार्य को बैठी हुई मुद्रा, कमल मुद्रा, पद्मासन और पारंपरिक मुद्रा में दर्शाया गया है, जो शांति और ध्यान दोनों का प्रतीक माना जाता है। यह प्रतिमा 54 फुट ऊंचे चबूतरे पर स्थापित है, जिस पर संग्रहालय और अनुसंधान केंद्र स्थित हैं। यह चबूतरा रामानुजाचार्य के संदेश के स्तंभों और आधुनिक विश्व में उनकी प्रासंगिकता का प्रतीक है। यह समाज में समानता और देश में एकता का प्रतीक भी है। इसके चारों ओर एक मंदिर परिसर और आगंतुकों के लिए एक उच्च-तकनीकी केंद्र है। यह प्रतिमा और परिसर इंजीनियरिंग के अद्भुत कौशल को प्रदर्शित करता है।

बांद्रा-वर्ली सी लिंक

मुंबई में रहने वाले बहुत से निवासी बांद्रा-वर्ली सी लिंक के जरिए यात्रा करते हैं। यह शानदार केबल-स्टेड ब्रिज भारत की आधुनिक इंजीनियरिंग विशेषज्ञता का एक अनुपम उदाहरण है। 5.6 किलोमीटर लंबा यह पुल बांद्रा और वर्ली के व्यस्त उपनगरों को जोड़ता है, जिससे शहर की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर सफर का समय कम हो जाता है। केबलों को थामे रखने वाले विशाल खंभे समुद्र तल से 128 मीटर ऊपर हैं। 66 फीट चौड़े इस ब्रिज पर आठ लेन में आवागमन होता है। वर्ष 2000 में इसका निर्माण शुरू हुआ और वर्ष 2010 में यह आम जनता के लिए खोल दिया गया।

पीर पंजाल अटल रेलवे सुरंग

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा '10,000 फीट से ऊपर दुनिया की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग' के रूप में दर्ज, अटल सुरंग हिमाचल प्रदेश में मनाली-लेह राजमार्ग पर रोहतांग दर्रे के नीचे स्थित है। चुनौतीपूर्ण भू-भाग और जमा देने वाले तापमान में निर्मित, 9.02 किलोमीटर लंबी इस सुरंग को रोहतांग सुरंग के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण सर्दियों के महीनों में राजमार्ग के बंद होने की समस्या को दूर करने के लिए किया गया है, जिससे लाहौल और स्पीति अलग-थलग पड़ जाते थे। सुरंग के निर्माण से मनाली-केलांग मार्ग की दूरी 46 किलोमीटर कम हो गई है, जिससे इस दूरी की यात्रा का समय लगभग चार से पांच

घंटे कम हो गया है। हिमालय में पीर पंजाल पर्वतमाला की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को देखते हुए, इस सुरंग के निर्माण के लिए उत्कृष्ट तकनीकी और इंजीनियरिंग कौशल का उपयोग किया गया। यह प्रभावशाली परियोजना आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग में भारत की विशेषज्ञता का गौरव है और भारत के सर्वश्रेष्ठ सिविल इंजीनियरिंग चमत्कारों में से एक है। *

धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल

मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित यह एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्कूल है। यहां वर्षाजल का संचयन और ऊर्जा संरक्षण सहित समकालीन वास्तुकला सुविधाएं मौजूद हैं। डिजाइन से संबंधित आधुनिक विशेषताओं के लिए इसे सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से एक माना जाता है क्योंकि यह स्थिरता के बारे में बहुत कुछ कहता है। स्कूल ने हाल ही में अत्याधुनिक सुविधाओं को शामिल किया है, जिसमें सौर पैनल और जल पुनर्चक्रण प्रणालियों सहित एडवांस्ड ग्रीन टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है। अत्याधुनिक कक्षाएं और इंटरेक्टिव शिक्षण वातावरण एक सुव्यवस्थित परिसर में जोड़े गए हैं, जो पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ शिक्षा में उत्कृष्टता पर जोर देते हैं। इंजीनियर्स के योगदान से ही इसका निर्माण संभव हो पाया है।

तेलंगाना राज्य का प्रसिद्ध लोक-महोत्सव बतकम्मा, महिलाओं के सम्मान और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक पर्व है। भाद्रपद अमावस्या से शुरू होकर दुर्गाष्टमी तक नौ दिनों तक मनाए जाने वाले इस उत्सव के दौरान कला, संस्कृति और प्रकृति के आपसी जुड़ाव की निराली छटा दिखती है।

स्त्री सम्मान-प्रकृति प्रेम का प्रतीक लोक-महोत्सव बतकम्मा

सांस्कृतिक पर्व

सरिता सुराणा

हमारे देश में वर्ष भर त्योहारों का मेला लगा रहता है। सभी क्षेत्र, जाति और धर्म के लोग उत्साह-उमंग से विभिन्न पर्व मनाते हैं। लेकिन अलग-अलग राज्यों में भी अपने-अपने कुछ विशेष त्योहार मनाए जाते हैं। उन्ही में से एक है बतकम्मा पर्व। इसे तेलंगाना राज्य की महिलाएं मनाती हैं।

वातावरण में लहराती हैं स्वर लहरियां

छिन्निमा बतकम्मा, छिन्नारक्का बतकम्मा,
दादी मां बतकम्मा, दामेरमुतक्कल बतकम्मा।

ऐसे गीतों की मधुर स्वर लहरियां जब वातावरण में गूंजने लगती हैं तो समझ आ जाता है कि बतकम्मा पर्व आ गया है और संपूर्ण तेलंगाना में मातृशक्ति के प्रति सम्मान और प्रकृति प्रेम का सैलाब उमड़ रहा है।

इस पर्व में एक प्रतीकात्मक पुष्पों की प्रतिमा बनाई जाती है, जिसे बनाने के लिए कई रंगों के फूलों का उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे रंगों का त्योहार भी माना जाता है। पूरे तेलंगाना में यह बतकम्मा पर्व नौ दिनों तक मनाया जाता है। इसमें बहुत सुंदर तरीके से फूलों से अलग-अलग आकृतियां बनाई जाती हैं, इसमें प्रयोग किए जाने वाले ज्यादातर फूल आयुर्वेदिक दृष्टि से भी उपयोगी होते हैं। इसमें फूलों से सात परतों से मंदिर के गोपुरम जैसी आकृति बनाई जाती है। तेलुगु भाषा में बतकम्मा का मतलब होता है, देवी मां जिंदा हैं। इस दिन बतकम्मा को महागौरी के रूप में पूजा जाता है, यह पर्व स्त्रियों के सम्मान के रूप में मनाया जाता है।

कब मनाया जाता है: हिंदू पंचांग के अनुसार यह पर्व श्राद्ध पक्ष, भादो की अमावस्या, जिसे महालय अमावस्या भी कहते हैं, के दिन शुरू होता है और नवरात्र की अष्टमी के दिन खत्म होता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार यह सितंबर-अक्टूबर महीने में मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 21 से 30 सितंबर तक मनाया जाएगा। यह मानसून के अंत में शुरू होकर शीत ऋतु के प्रारंभ तक मनाया जाता है।

ऐसे मनाते हैं पर्व: इस पर्व में फूलों से एक बड़े पर्वत जैसी आकृति बनाई जाती है। इसके सबसे ऊपरी भाग में हल्दी से गौरम्मा बनाकर उसे रखा जाता है। इस दौरान नाच-गाने का आयोजन किया जाता है। बतकम्मा का नाम बृहदाम्मा से ही उत्पन्न हुआ है। माना जाता है कि भगवान शिव-पार्वती को प्रसन्न करने के लिए यह त्योहार 1000 साल से उसी इलाके (वर्तमान तेलंगाना) में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

जताते हैं प्रकृति के प्रति आभार: वर्षा ऋतु में सभी जगह पानी का प्रवाह होता है। नदी, तालाब एवं कुएं पानी से भर जाते हैं। उसके बाद धरती पर फूलों के रूप में पर्यावरण में बहार आ जाती है। इसी कारण प्रकृति का धन्यवाद देने के लिए तरह-तरह के फूलों के साथ इस पर्व को मनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने के लिए नव विवाहिताएं अपने मायके भी आती हैं। मान्यता है कि उनके जीवन में परिवर्तन लाने के लिए यह प्रथा शुरू की गई थी।

पर्व के शुरुआती पांच दिनों में महिलाएं अपने घर का आंगन स्वच्छ करती हैं और उसको गोबर से लीपा जाता है। सुबह जल्दी उठ कर उस आंगन में सुंदर-सुंदर मुग्गु बनाती हैं। कई जगह पर ऐप्पन से चौक बनाया जाता है, जिसमें सुंदर कलाकृति बनाई जाती है। चावल के आटे से बनी रंगोली का भी बहुत महत्त्व है। इस उत्सव में घर के पुरुष बाहर से नाना प्रकार के फूल एकत्र करते हैं, जिसमें सलोसिया, सेन्ना, मेरीगोल्ड, कमल, ककुर्बिता, कुकुमिस और बहुत से अन्य फूलों को एकत्रित किया जाता है। फूलों की तरह-तरह की परतें बनाई जाती हैं, उनके नीचे फूलों की पत्तियों से सजाया जाता है, इसे थंबलम के नाम से जाना जाता है। नौ दिन तक हर शाम महिलाएं और लड़कियां एकत्रित होकर नाचती, गाती हैं, ढोल बजाए जाते हैं। सब अपने-अपने बतकम्मा को लेकर आती हैं। इस दौरान महिलाएं पारंपरिक साड़ी, गहने पहनती हैं और लड़कियां लहंगा चोली पहनती हैं। सभी महिलाएं बतकम्मा के चारों ओर गोला बनाकर क्षेत्रीय भाषा में गीत गाती हैं। महिलाएं अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं। अष्टमी पूजा के बाद बतकम्मा को तालाब के पानी में विसर्जित कर दिया जाता है। *

किसी भी ग्रह से टूटकर पृथ्वी पर गिरे उल्कापिंड उस ग्रह के इतिहास और उसकी संरचना को समझने में मदद करते हैं। इसका उपयोग गहनों एवं सजावटी वस्तुओं में भी किया जाता है। यही वजह है कि ग्रहों के इन टुकड़ों की कीमत बहुत अधिक होती है। जानिए इस बारे में विस्तार से।

महत्वपूर्ण और कीमती होते हैं ग्रहों से टूटकर गिरे उल्कापिंड

रोचक

अंजू जैन

हाल ही में मंगल ग्रह से आए एक उल्कापिंड, NWA 16788, की न्यूयॉर्क में 'गीक वीक 2025' नीलामी हुई है। यह उल्कापिंड पृथ्वी पर पाया गया अब तक का सबसे बड़ा मंगल ग्रह का टुकड़ा माना जाता है, जिसका वजन 24.5 किलोग्राम है। इसकी अनुमानित कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए (लगभग 1.8 से 3.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के बीच है।

क्या है NWA 16788: यह एक शर्गोटाइट उल्कापिंड है, जो मंगल ग्रह की भूगर्भीय संरचना के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। यह सहारा रेगिस्तान में पाया गया था और मंगल ग्रह की सतह से उत्पन्न हुआ माना जाता है। इसकी सतह पर लाल-भूरी फ्यूजन क्रस्ट है, जो अंतरिक्ष में इसकी यात्रा के दौरान उच्च तापमान के कारण बनी। यह मंगल ग्रह की मिट्टी से बना है और इसकी उम्र लगभग 74.2 करोड़ साल पुरानी बताई जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: यह उल्कापिंड मंगल ग्रह के इतिहास और संरचना को समझने में मदद करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह उस समय के मंगल ग्रह की सतह का हिस्सा हो सकता है, जब वहां पानी मौजूद था।

मूल्य और विशेषता: इसकी कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए के बीच अनुमानित है, जो इसे अब तक के सबसे महंगे उल्कापिंडों में से एक बनाता है।

क्यों होते हैं इतने महंगे: ग्रहों या उल्काओं से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़े, जिन्हें उल्कापिंड कहा जाता है, कई कारणों से महंगे होते हैं। इनमें शामिल हैं-

दुर्लभता: उल्कापिंड अंतरिक्ष से पृथ्वी पर बहुत कम मात्रा में पहुंचते हैं। इनमें से कुछ विशेष प्रकार, जैसे चंद्रमा या मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड, अत्यंत दुर्लभ होते हैं, जिससे उनकी कीमत बढ़ जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: उल्कापिंड ग्रहों की उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक इनका अध्ययन ग्रहों की भौतिक-रासायनिक संरचना और प्राचीन इतिहास को समझने के लिए करते हैं, जिससे इनकी मांग बढ़ती है।

सौंदर्य और संग्रहणीयता: कुछ उल्कापिंडों में अनोखे पैटर्न (जैसे विडमैनस्टेटन पैटर्न) या रंग होते हैं, इस कारण इनका उपयोग गहनों या सजावटी वस्तुओं के निर्माण में भी किया जाता है।

उत्पत्ति: चंद्रमा, मंगल या विशिष्ट क्षुद्रग्रहों से आए उल्कापिंड अत्यंत मूल्यवान होते हैं, क्योंकि ये पृथ्वी के बाहर की सामग्री होते हैं। उल्कापिंडों को खोजने, पुनर्प्राप्त करने और उनकी प्रामाणिकता सत्यापित करने में समय, संसाधन और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व: कुछ संस्कृतियों में उल्कापिंडों को पवित्र माना जाता है, जैसे भारत में कुछ प्राचीन मंदिरों में रखे गए उल्कापिंड।

ग्रहों के टुकड़ों के प्रकार: ग्रहों से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़ों के कई प्रकार होते हैं, जैसे-

उल्का पिंड: जब उल्का पृथ्वी के वायुमंडल से गुजर कर सतह पर पहुंचती है, तो उसे उल्कापिंड कहते हैं।

उल्का: अंतरिक्ष से पृथ्वी की ओर आने वाला पदार्थ जो वायुमंडल में जलता है और 'टूटता तारा' जैसा दिखता है।

क्षुद्रग्रह: अंतरिक्ष में चक्कर लगाने वाले बड़े चट्टानी पदार्थ, जिनके टुकड़े उल्कापिंड के रूप में पृथ्वी पर गिर सकते हैं।

चंद्र उल्का पिंड: चंद्रमा से उत्पन्न होने वाले उल्का पिंड।

मंगल उल्का पिंड: मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड।

पैलासाइट: लोहे और सिलिकेट खनिजों से बने विशेष उल्का पिंड, जो अकसर सुंदर क्रिस्टल पैटर्न दिखाते हैं।

कोन्ड्राइट: सबसे आम उल्कापिंड, जिनमें सौरमंडल की प्राचीन सामग्री होती है।

इनके अलावा भी विभिन्न ग्रहों से टूटकर गिरे टुकड़ों या उल्कापिंडों के अलग-अलग कई प्रकार एवं अलग-अलग नाम होते हैं।

अब हम आपको अब तक मिले कुछ बेहद महत्वपूर्ण उल्कापिंड और उनकी कीमत के बारे में बताते हैं।

होबा उल्कापिंड: नामीबिया में 1920 ई. में पाया गया लगभग 60 टन वजनी यह उल्कापिंड अब तक का ज्ञात सबसे बड़ा एकल उल्कापिंड है। इसका बाजार मूल्य निर्धारित नहीं है, क्योंकि यह वहां की राष्ट्रीय संपत्ति है, लेकिन इसकी कीमत अरबों रुपए हो सकती है।

फुकांग पैलासाइट: साल 2000 में चीन में पाया गया यह उल्का पिंड पैलासाइट (लोहा और ओलिवाइन क्रिस्टल) कैटेगरी का है। यह अपने सुंदर क्रिस्टल पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। इस उल्कापिंड के इसके छोटे टुकड़ों की कीमत 20 से 50 डॉलर प्रति ग्राम तक हो सकती है।

चेल्याबिंस्क उल्कापिंड: साल 2013 में रूस में गिरा साधारण कोन्ड्राइट प्रकार का यह उल्का पिंड एक खास वजह से प्रसिद्ध है। दरअसल, 2013 में इसके गिरने से एक बड़ा विस्फोट हुआ था, जिसने इसे विश्व प्रसिद्ध बनाया। इसके टुकड़ों की कीमत 1 से 10 डॉलर प्रति ग्राम तक रही है।

नखला उल्कापिंड: मिस्र में साल 1911 में गिरा यह उल्कापिंड मंगल ग्रह से गिरे होने की पुष्टि वाला पहला उल्कापिंड है। इसकी कीमत प्रति ग्राम 100 से 300 डॉलर तक तक हो सकती है।

एलेंडे उल्कापिंड: मैक्सिको में 1969 ई. में गिरे कार्बोनेशियस कोन्ड्राइट प्रकार के इस उल्कापिंड में सौरमंडल की सबसे प्राचीन सामग्री और कार्बनिक यौगिक पाए गए हैं, जो जीवन की उत्पत्ति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसकी कीमत प्रति ग्राम 1 से 5 डॉलर अनुमानित है। लेकिन इसके दुर्लभ टुकड़ों की कीमत अधिक हो सकती है। *

सिने संवाद

डी.जे. नंदन

बॉलीवुड फिल्मों की बात करें तो शुरुआत से लेकर अब तक की फिल्मी संवाद की भाषा हिंदी में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हर अदाकार अपने अंदाज में हिंदी तो बोलता ही है, समय और पीढ़ी के अनुसार भी इसमें बदलाव आते रहे हैं। इन बदलावों पर एक नजर।

पहले के दौर से कितनी बदली बॉलीवुड फिल्मों की हिंदी

'राजी' में आलिया भट्ट के संवाद रहे असरदार

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हैं 'गुड लक जेरी' के संवाद

अगर आप हिंदी फिल्मों के शौकीन हैं तो बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली आज की हिंदी में पिछली सदी के पचास, साठ, सत्तर और अस्सी के दशकों की बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी से कुछ अंतर महसूस करते होंगे। क्या फर्क है तब और अब की फिल्मों की हिंदी में, एक दृष्टि डालते हैं।

बीते दौर की बॉलीवुड फिल्मों में हिंदी: पिछली सदी के सत्तर और अस्सी के दशक के एक्टर्स की बात करें तो अमिताभ बच्चन की हिंदी बहुत समृद्ध थी, साथ ही उसमें हमेशा 'संवाद अदायगी' का एक मंचीय असर दिखता था। उनसे पूर्व दिलीप कुमार के संवाद इतने अधिक अभिनय केंद्रित हुआ करते थे कि दर्शक डायलॉग्स को सुनने की बजाय देखने लगता था। दिलीप

'उधम सिंह' में विक्की कौशल

कुमार के संवादों में हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा देखने को मिलती है।

ऐसे ही अभिनेता राजकुमार की संवाद अदायगी में उर्दू-शैली का असर दिखता था, जो उनकी अभिजातीय छवि का हिस्सा बनता था। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'पाकीजा' में उनकी संवाद अदायगी को देखा जा सकता है। अपने जमाने में राजेश खन्ना या शत्रुघ्न सिन्हा जैसे अभिनेता अकसर अपने मूल क्षेत्रीय लहजों को पूरी तरह छोड़े बिना हिंदी बोलते थे। यह उस दौर में 'स्वाभाविक' ही माना जाता था।

अपने दौर की बेहतरीन अभिनेत्री स्मिता पाटिल भाषा को साधने में माहिर थीं। वह बहुत अच्छी हिंदी बोलती थीं। उनके द्वारा बोले गए संवाद बहुत गूंजदार, ठहराव से भरे होते थे। उनके संवादों में लयात्मकता होती थी और इसमें कविताई का आभास होता था। समग्रता में देखा जाए तो पिछली सदी के 70 और 80 के दशक में अभिनेता हिंदी को एक खास छंद, ठहराव और 'दबाव' के साथ बोलते थे। यह एक 'शास्त्रीय लहजा' था, जो दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, शबाना आजमी, स्मिता पाटिल आदि कलाकारों की संवाद अदायगी में दिखता था।

आज के फिल्मों की हिंदी: हर दौर की अपनी एक अलग भाषा, संवाद का एक अलग सलीका होता है। यह बात हिंदी फिल्मों पर भी लागू होती है। आज की फिल्मों की हिंदी पहले की फिल्मों से बेहतर भले न हो, यह पहले की तुलना में अलग जरूर है और असरदार भी। आज फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी ज्यादा लचीली, संवादधर्मी और ग्लोबल शहरी अनुभव से जुड़ी है। यह किसी खास उच्चारण और लहजे में नहीं बोली जाती बल्कि यह हमारे-आपके जैसे सामान्य लोगों की तरह ही बोली जाती है।

हिंदी बोलने में दिखता है आत्मविश्वास: आज की पीढ़ी के अभिनेता और अभिनेत्रियां हिंदी को पूरे आत्मविश्वास से बोलते हैं। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'सरदार उधम सिंह' के संवाद 'जो लहू नहीं खौला, वो लहू नहीं...' को देखा जा सकता है। फिल्म में विक्की कौशल पूरे आत्मविश्वास और गहराई के साथ हिंदी बोलते हैं। न संवादों में कोई बनावट, न हिचक। फिल्म के संवादों के उच्चारण में हिंदी की शुद्धता भले गायब हो, लेकिन हिंदी के लिए गर्व और सहजता यहां साफ देखा जा सकता है।

दिखता है सहज भाषाई प्रवाह: आज की बॉलीवुड फिल्मों में सहज भाषाई प्रवाह दिखता है। इसका एक खूबसूरत उदाहरण आलिया भट्ट की फिल्म 'राजी' है। इस फिल्म में

भाषा को साधने में माहिर थीं स्मिता पाटिल

एक कश्मीरी लड़की की भूमिका निभाते हुए आलिया ने जिस तरह की हिंदी बोली है, उसमें पानी जैसा बहाव है। कोई भी शब्द या संवाद अतिरिक्त जोर देकर नहीं बोला गया था, फिर भी ये असरदार थे।

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हिंदी: आज के दौर की फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी की एक और खास बात यह है कि आज के ज्यादातर अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का उच्चारण और लहजा क्षेत्रीयता से मुक्त है। उदाहरण के तौर पर जान्हवी कपूर की 'गुड लक जेरी' को देखा जा सकता है। फिल्म में जान्हवी को बिहारी-पंजाबी पृष्ठभूमि का दिखाया गया है, फिर भी उनका उच्चारण क्षेत्रीयता से मुक्त 'न्यूट्रल शहरी हिंदी' जैसा है।

कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर: आज के अभिनेताओं को मंचीय प्रशिक्षण, स्क्रिप्ट वर्कशॉप्स और संवाद को स्वाभाविक बनाने की ट्रेनिंग मिलती है। आज के दौर में संवाद अदायगी की नाटकीय शैली के स्थान पर रोजमर्रा की जिंदगी में बोली जाने वाली हिंदी और इसकी कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर दिया जाता है। विक्की कौशल, राजकुमार राव, तापसी पन्नू, भूमि पेडनेकर, ये सभी संवादों में हिंदी को आत्मसात करके बोलते हैं। ये हिंदी को 'परफॉर्म' नहीं करते, बल्कि 'जीते' हैं।

कुल मिलाकर, फिल्मों में आज की पीढ़ी की हिंदी ज्यादा कैजुअल, लचीली और वास्तविक जिंदगी से जुड़ी लगती है। पहले के फिल्मों की हिंदी भाषा में 'भाषाई सौंदर्य' था, आज के फिल्मों की हिंदी में 'संवादिक सहजता' है। *